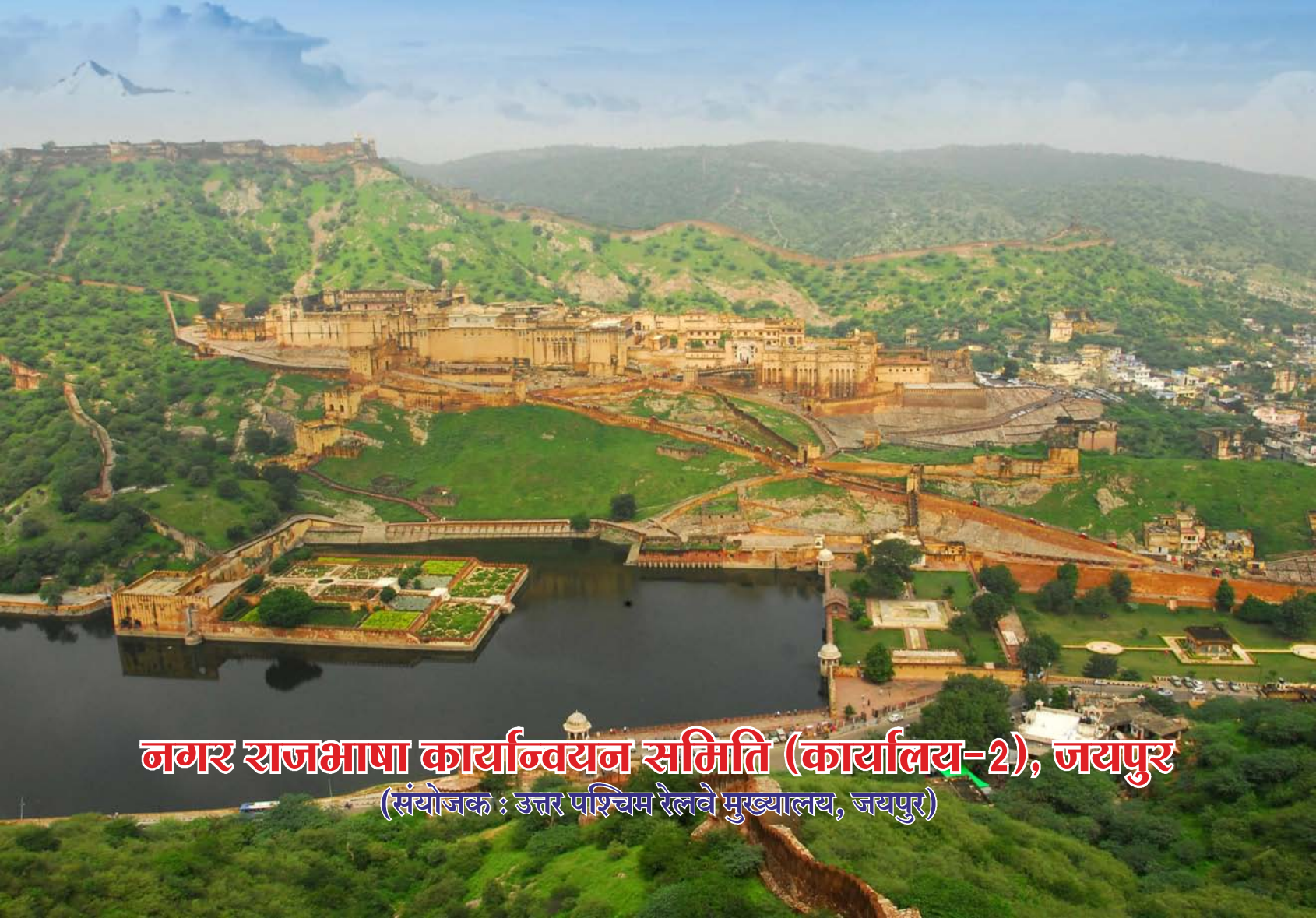


# दार्पण

वार्षिक हिंदी पत्रिका

वर्ष 2024 \* अंक-6



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय-2), जयपुर  
(संयोजक : उत्तर पश्चिम रेलवे मुख्यालय, जयपुर)



# दर्पण

\* संपादक मंडल \*



संरक्षक  
**श्री अशोक माहेश्वरी**  
अपर महाप्रबंधक, उत्तर पश्चिम रेलवे  
जयपुर



मुख्य संरक्षक  
**श्री अमिताभ**  
महाप्रबंधक, उत्तर पश्चिम रेलवे  
एवं अध्यक्ष नराकास (कार्यालय-2), जयपुर



परामर्शदाता  
**सुश्री गीतिका पाण्डेय**  
मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं  
प्रमुख वित्त सलाहकार, जयपुर



प्रधान संपादक  
**श्रीमती ऋतु शुक्ला**  
अपर महानिदेशक, केंद्रीय संचार ब्यूरो  
एवं पत्र सूचना कार्यालय, जयपुर



**डा. सुभाष चन्द्र**  
निदेशक  
कदन्न विकास निदेशालय, जयपुर



**श्री मुकेश सैनी**  
उप मुख्य राजभाषा अधिकारी  
एवं उप मुख्य वाणिज्य प्रबंधक उत्तर पश्चिम रेलवे, जयपुर



**श्री गुरुदयाल सिंह**  
राजभाषा अधिकारी  
एवं सदस्य सचिव नराकास (कार्यालय-2), जयपुर

## दर्पण



**अमिताभ**

महाप्रबंधक

**Amitabha**

General Manager

एवं अध्यक्ष

नराकास (कार्यालय-2), जयपुर



उत्तर पश्चिम रेलवे

प्रधान कार्यालय, जवाहर सर्किल के पास,

मालवीय नगर, जयपुर-302017

**NORTH WESTERN RAILWAY**

Headquarter Office, Near Jawahar Circle,

Malviya Nagar, JAIPUR-302017

Ph. 0141-2725800 (Off.)

0141-2725816 (Fax)

### अध्यक्ष की कलम से...

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा जारी नीति-निर्देशों के अनुपालन में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य कार्यालयों में राजभाषा प्रगति की समीक्षा के साथ-साथ हिंदी गृह पत्रिका प्रकाशित करना भारत सरकार की राजभाषा नीति का प्रमुख अंग है। भारत सरकार की नीति के अनुसरण में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य कार्यालयों के सहयोग से “दर्पण” वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका प्रकाशित की गई है। इस पत्रिका में सदस्य कार्यालयों से प्राप्त मौलिक रचनाओं सहित राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम 2024-25 को उचित स्थान दिया गया है।

समिति के सभी सदस्य कार्यालयों में राजभाषा का प्रयोग भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुरूप हो रहा है। मेरा पुनः अनुरोध है कि दैनिक प्रशासनिक कार्यों में हिंदी के अधिक से अधिक प्रयोग पर विशेष बल दिया जाए।

वर्तमान में सभी केंद्रीय कार्यालयों में अधिकांश प्रशासनिक कार्य डिजिटल माध्यम से किए जा रहे हैं। इन डिजिटल माध्यमों में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए उपलब्ध ई-टूल्स की उपयोगिता के बारे में व्यापक जागरूकता और जानकारी की आवश्यकता है जिससे हमारी समिति के सभी सदस्य कार्यालयों में राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित किया जा सके। हमें केवल आंकड़ों से ही संतुष्ट नहीं होना चाहिए वरन् जिन कार्यालयों में जो कार्य राजभाषा में नहीं किए जा रहे हैं, हमें उन कारणों का विश्लेषण भी करना होगा कि वे कार्य राजभाषा में क्यों नहीं संपादित किए जा सकते हैं और उन कारणों का निराकरण करना होगा।

मैं पत्रिका प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को बधाई देता हूं और इसके सफल प्रकाशन की कामना करता हूं।

शुभकामनाओं सहित।

  
( अमिताभ )  
महाप्रबंधक

## संपादकीय



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय-2), जयपुर की राजभाषा पत्रिका दर्पण का छठवां अंक आप सभी को समर्पित करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने और उसका कार्यालयों में व्यापक प्रचार-प्रसार करने में हिंदी पत्रिका के नियमित अंकों के प्रकाशन का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। दर्पण हमारे कार्यालयों के कार्मिकों में छिपी रचनात्मकता और साहित्यिक प्रतिभा को एक मंच प्रदान करती है। इस दर्पण में इस बार भारत की विविधता, यहाँ के उत्सव, खान-पान, संस्कृति, देश-भक्ति, देश की साख(जी-20), गाँधी दर्शन, साहित्य की झलक देखने को मिलती है। साथ ही यह पत्रिका सभी सदस्य कार्यालयों द्वारा राजभाषा नीति के अनुपालन में की जा रही गतिविधियों को नराकास सदस्यों के कार्यालयों के बीच साझा करने का एक सशक्त माध्यम भी है।

मैं इस पत्रिका प्रकाशन में हमारे मार्गदर्शक माननीय अध्यक्ष/नराकास, जयपुर का विशेष रूप से आभारी हूँ जिनके मार्गदर्शन में इस पत्रिका का प्रकाशन संभव हो सका। साथ ही मैं सभी रचनाकारों तथा सदस्य कार्यालयों को धन्यवाद देती हूँ जिन्होंने इसके प्रकाशन में अपना बहुमूल्य योगदान दिया।

हमारा यह प्रयास रहा है कि यह अंक सभी के लिए रुचिपूर्ण और ज्ञानवर्धक हो और हमारे सुधी पाठकों को पंसद आए। फिर भी आप अपने बहुमूल्य विचारों एवं सुझावों से हमें अवश्य अवगत कराएं जिससे इस पत्रिका के आगामी अंकों को और बेहतर स्वरूप दिया जा सके।

धन्यवाद।

अनुमोदित

ऋतु शुक्ला

अपर महानिदेशक

केंद्रीय संचार ब्यूरो एवं पत्र सूचना कार्यालय  
जयपुर

# नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय-2), जयपुर

## दर्पण

संयोजक कार्यालय : राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय, उत्तर-पश्चिम रेलवे, जयपुर  
अंक : 6, वर्ष - 2024

| मुख्य संरक्षक<br>अमिताभ<br>महाप्रबंधक<br>***<br>संरक्षक<br>अशोक माहेश्वरी<br>अपर महाप्रबंधक<br>***<br>परामर्शदाता<br>गीतिका पाण्डेय<br>मुख्य राजभाषा अधिकारी<br>***<br>प्रधान संपादक<br>ऋतु शुक्ला<br>अपर महानिदेशक, केंद्रीय संचार ब्यूरो एवं<br>पत्र सूचना कार्यालय, जयपुर<br>***<br>संपादक<br>गुरुदयाल सिंह<br>राजभाषा अधिकारी<br>***<br>संपादन सहयोग<br>राजभाषा विभाग<br>उत्तर पश्चिम रेलवे, प्रधान कार्यालय, जयपुर<br>***<br>संपर्क सूत्र<br>राजभाषा विभाग, उत्तर पश्चिम रेलवे<br>प्रधान कार्यालय, जयपुर<br>मो. नं. 9001195029 | क्र.सं. | लेख                                                         | लेखक                        | पृष्ठ सं. |
|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------|-------------------------------------------------------------|-----------------------------|-----------|
|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     | 1.      | हम है कौन-<br>इंडियन, भारतीय, हिंदुस्तानी,...               | संजय कुमार                  | 6         |
|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     | 2.      | यशस्विनी<br>सी.आर.पी.एफ. महिला बाइक<br>अभियान               | विक्रम सहगल                 | 12        |
|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     | 3.      | मांड                                                        | राजू जौहरी                  | 13        |
|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     | 4.      | बीकानेर का ऊंट महोत्सव                                      | बबीता राघव                  | 14        |
|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     | 5.      | कृष्ण शकुनि पासों का खेल                                    | सौम्या विजय                 | 15        |
|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     | 6.      | पौधारोपण                                                    | उपेन्द्र माथुर              | 16        |
|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     | 7.      | हे इसरो तुझे सलाम                                           | राम खिलाड़ी मीना            | 17        |
|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     | 8.      | घूम-घूम कर भारत में<br>हम आज दोहराई कर लेंगे                | दिनेश                       | 18        |
|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     | 9.      | जी-20 संगठन में<br>भारत की भूमिका                           | ओम प्रकाश जायसवाल           | 23        |
|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     | 10.     | भारतीय अर्थव्यवस्था में<br>सिपेट का योगदान                  | ज्ञानचन्द जैन               | 26        |
|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     | 11.     | कविता                                                       | डॉ. मुक्ता                  | 27        |
|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     | 12.     | मिलेट्स: एक बहुपयोगी अनाज                                   | डॉ. ओम प्रकाश खेदड़         | 28        |
|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     | 13.     | राजभाषा हिंदी प्रतिवेदन -<br>प्रावैधानिक प्रक्रिया          | अजय सिंह तोमर               | 30        |
|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     | 14.     | सूखा सावन                                                   | तुंग नाथ त्रिपाठी           | 31        |
|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     | 15.     | महात्मा गांधी और<br>हिंदुस्तानी भाषा                        | पराग मांदले                 | 32        |
|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     | 16.     | आधुनिक जीवनशैली और तनाव                                     | योगेश सांगुले               | 34        |
|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     | 17.     | ईमानदारी-एक जीवनशैली                                        | प्रवीण शर्मा                | 35        |
|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     | 18.     | कविता लिखने की वजह                                          | श्रीकृष्ण चन्द्र श्रीवास्तव | 36        |
|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     | 19.     | हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष<br>2024-25 का वार्षिक कार्यक्रम | राजभाषा विभाग               | 37        |

इस प्रतिका में प्रकाशित लेखों, रचनाओं, कविता आदि में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखकों व रचनाकारों के अपने हैं जिसके लिए संपादक मंडल उत्तरदायी नहीं है। - संपादक मंडल

## हम हैं कौन- इंडियन, भारतीय, हिंदुस्तानी,.....



मांगलिक कार्यों में यह संकल्प आपने सुना होगा- “जम्बुद्वीपे भारतखण्डे आर्यावर्त देशांतर्गते...” इस छोटे से मंत्र द्वारा हम अपने गौरवमयी इतिहास का व्याख्यान कर डालते हैं। प्रश्न यह उठता है कि हमारे देश का मूल नाम क्या है- जम्बु द्वीप, भारत, भारतवर्ष, आर्यावर्त या इंडिया। वैसे विश्व में एक ही देश के कई नाम होने के अनेक उदाहरण हैं। जर्मनी का देशी नाम Deutschland है और यूनानियों ने इसे Germania कहा। इसी तरह चीन (China) के उनकी ही अपनी भाषा में अनेक नाम हैं Zhongguo, Zhōnghuá ("central beauty"), Huáxià ("beautiful grandness"), Shénzhōu ("divine state") और Jiǔzhōu ("nine states")। जापान का पुराना नाम Yamato (कोरियन मूल) है और दसवीं शताब्दी में Nippon/Cipan (मंदारिन मूल) नाम प्रचलन में रहा। ऐसे ही हमारे देश के विभिन्न प्रचलन में रहे हैं, इसको समझने के लिए हमें इतिहास में जाना होगा।

इतिहास हमेशा विजेता द्वारा लिखा जाता है और वह इतिहास नहीं विजेता की गौरव-गाथा होती है। भारत के साथ भी यही हुआ है, पहले इस्लामिक आक्रमण और 800 वर्षों का शासन और फिर अंग्रेजों के 200 वर्ष तक के शासन ने इस देश के इतिहास लेखन को इस तरह से प्रभावित किया कि आज भी लोगों को यही लगता है कि इंडिया (India) को अंग्रेजों ने बनाया। पिछले 70 वर्षों में जिस तरह से इतिहास को उसी इस्लामिक और अंग्रेजों को केंद्र में रख कर पढ़ाया गया है ये उसी का परिणाम है। ब्रिटिश काल के इतिहासकारों ने अपने हिसाब से ही इतिहास लिखा जैसा एक विजेता लिखता है यानि अपने ही गुणगान में। उनके द्वारा किताबों में यह जानबूझकर लिखा गया जिससे पढ़ने वालों को यह लगे कि उनके आने से पहले भारत नाम का कोई देश ही नहीं था और

जो भी बनाया गया वह सिर्फ और सिर्फ अंग्रेजों की देन है। उनके बाद हमारे देश के चाटुकार इतिहासकारों ने भी उसी को आधार बनाकर उनका गुणगान किया। इस वजह से आज हमारे देश में जो भी इतिहास पढ़ाया जाता है उसे पढ़ कर यही भावना आती है कि ब्रिटिश के आने से पहले भारत या India था ही नहीं।

आज के अफगानिस्तान, पाकिस्तान और पंजाब (भारत) के भू-भाग से अनेक नदियों का एक समूह गुजरता है जिसे सप्त-सिंधु कहा गया है, जैसाकि मानचित्र में दर्शाया गया है, सिंधु इसमें प्रमुख नदी है। ‘सिंधु (SINDHU)’ संस्कृत शब्द है। फारसी भाषा में ‘स’ अक्षर को ‘ह’ उच्चारित किया जाता है, इसलिए ईरानियों (पूर्ववर्ती PERSIAN) ने सिंधु को हिंदु/हिंदू कहा और यहां रहने वालों को हिंदू कहा। यूनानी भाषा में ‘ह’ को ‘इ’ उच्चारित किया जाता है इसलिए यूनानियों (Greeks) ने हिंदू को इंदु (INDUS) कहा। बाद में



लैटिन भाषा में इंदु (INDUS) का अपभ्रंश इंडिया (INDIA) हो गया। अरबी भाषा में हिंदुस्तान कहा गया। पश्चिमी देशों (ईरान, यूनान आदि) ने अपने ऐतिहासिक लेखों में सिंधु नदी के पूर्व के भू-भाग में रहने वालों को हिंदू/Indoi नाम से उल्लेख किया है। फारसी ग्रंथ जेन्द-अवेस्ता में सिंधु को हिंदू कहा गया है।

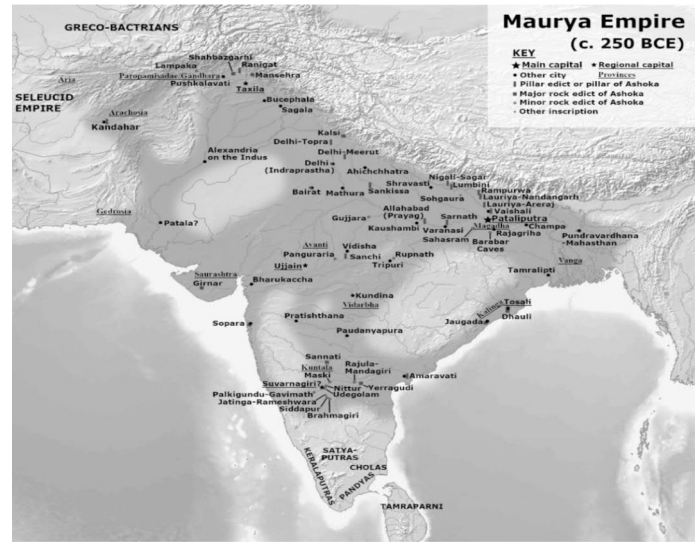
पांचवी शताब्दी ईसा-पूर्व यूनानी इतिहासकार हेरोडोटस (Herodotus) ने अपने ग्रंथ 'Histories' में 'India' शब्द का उल्लेख करते हुए इस क्षेत्र को मसालों और सोने (spices and gold) से समृद्ध बताया है। इसके उपरांत चौथी शताब्दी ईसा-पूर्व यूनानी इतिहासकार मेगस्थनीज (Megasthenes) मौर्य साम्राज्य में यूनानी शासक सेल्यूकस निकेटर के राजदूत के रूप में आये और उन्होंने अपने ग्रंथ 'Indika' में भूगोल, संस्कृति और समाज के बारे में विस्तृत वर्णन किया। यूनानी इतिहासकार अर्रियन (Arrian) ने भी चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में यूनानी शासक सिकंदर (Alexander) के आक्रमण के वर्णन में भी इस भू-भाग को इंडिका नाम से ही उल्लेख किया है।

आचार्य चतुरसेन शास्त्री की अमूल्य पुस्तक 'वैदिक संस्कृति पर दृग स्पर्श' के अनुसार महाभारत में लिखा है कि 'आर्यावर्त' के बाहर जो देश है वह भारत है। यही बात मेगस्थनीज ने 'इंडिका' में कही है, वह लिखते हैं- सिंध दरिया से लेकर गंगा के मुहाने तक तथा हिमालय से लेकर समुद्र तक के भू-भाग में तीन देश- आर्यावर्त, प्राच्य देश और पंडाया देश (Pandaia) बसते हैं। इस प्रकार वर्तमान समय के अनुसार सिंध दरिया से लेकर बंगाल की खाड़ी तक तथा हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक यानी मौजूदा अफगानिस्तान, पाकिस्तान, भारत, नेपाल, भूटान तथा बांग्लादेश वाले धरती के टुकड़े पर उस समय तीन देश बसते थे।

1. वर्तमान अफगानिस्तान व पाकिस्तान के पहाड़ी क्षेत्र को उस समय 'आर्यन' प्रदेश अर्थात 'आर्यावर्त' कहा जाता था। मेगस्थनीज के 250 वर्ष बाद मनु ने मनुस्मृति (2.22) में लिखा है कि हिमालय के विंध्य तथा पूर्वी समुद्र से लेकर पश्चिमी समुद्र तक का क्षेत्र 'आर्यावर्त' है।
2. वर्तमान में केरल तथा तमिलनाडु के कुछ हिस्से वाले क्षेत्र में पंडाया देश (Pandaia) बसता था।

3. शेष सारे भू-भाग का नाम परसाई या प्राच्य देश था, जिस पर मौर्य वंश का राज था।

मेगस्थनीज आगे लिखते हैं कि सिकंदर ने आर्यावर्त और उसके साथ लगते क्षेत्र के रजवाड़ों को हरा कर यह इलाका अपने देश के अधीन कर लिया था। यह इलाका जीत कर उसने एक सेनापति सेल्यूकस निकेटर (Seleucus Nicator) को यहां का क्षत्रप नियुक्त किया। जब सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य (Greek name Sandracottos, जिन्होंने मौर्य वंश की स्थापना की, शासन काल 298 से



322 ईसा पूर्व) ने सेल्यूकस को सिंध दरिया में मैदानी इलाके से खदेड़ने के लिए हमला किया, तो उसने सम्राट के आगे घुटने टेक दिए। सम्राट चन्द्रगुप्त अपनी सीमा को सुरक्षित करना चाहते थे, अतः दोनों में सन्धि हुई, जिनकी तीन बातों का उल्लेख मेगस्थनीज तथा उसके समकालीन लेखक अपने लेखन में करते हैं-

1. सेल्यूकस ने सम्राट चन्द्रगुप्त को अपना दामाद स्वीकार कर लिया। इसलिए उसने अपनी बेटी की शादी सम्राट से कर दी। यह शादी इस बात की गारंटी थी कि सेल्यूकस अपनी बेटी के घर न तो आक्रमण करेगा और न ही किसी को करने देगा।
2. सेल्यूकस ने सम्राट चन्द्रगुप्त को शादी के उपहार में आर्यावर्त का इलाका भेंट किया। उसके बाद से आर्यावर्त भारत का हिस्सा बन गया।

3. सम्राट चन्द्रगुप्त ने अपने ससुर सेल्यूकस को भारत के बेहतरीन 500 हाथी भेंट किए।

इस सन्धि की सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि ब्राह्मणों का 'आर्यावर्त' उस समय 'भारत' में शामिल किया गया। उससे पहले यह यूनानियों की गुलाम बस्ती थी।

पुराणों में दी गई वंशावली के अनुसार भरत के ही खानदान में महाभारत का अर्जुन पैदा हुआ। दोनों में 25 पीढ़ियों का अंतर है, अर्थात् भरत से लगभग 500 वर्ष बाद महाभारत की लड़ाई हुई। कालगणना के नाम पर यह दावा किया जाता है कि यह लड़ाई भगवान बुद्ध के जन्म से 2539 वर्ष पहले हुई थी।

सबसे पहला प्रश्न यह उठता है कि अगर महाभारत से भी 500 वर्ष पहले हमारे देश का नाम भारत रखा जा चुका था, तो महाभारत में 'भारत' देश का उल्लेख क्यों नहीं हुआ? सैकड़ों चक्रवर्ती राजा इस लड़ाई में भाग लेने आए, लेकिन किसी भी राजा ने यह नहीं कहा कि उसका देश 'भारत' है, क्यों?

भगवान बुद्ध के उपदेश, जोकि पाली भाषा के 'तिपिटक' ग्रंथों में (in pali language- 'Tipitaka') में संग्रहीत है। इस भूखण्ड को 'जंबुद्वीप' कहा गया है परंतु कभी भी भारत नहीं कहा गया है। यदि उनसे 300 वर्ष पहले भरत ने इस देश का नामकरण किया था तो भगवान बुद्ध कहीं तो उस नाम का प्रयोग करते।

उनसे 200 वर्ष बाद मेगस्थनीज ने इंडिका लिखी, उस समय तक इस देश का नाम 'इंडिका' या परसाई था। यानि तब तक किसी 'भरत' ने भारत का नामकरण नहीं किया था। उसके बाद से हर पल का हिसाब इतिहास के पन्नों पर दर्ज है। उसमें कहीं भी इस देश पर भरत नामक राजा के शासन करने का उल्लेख नहीं है कि भरत के नाम पर हमारे देश का नाम भारत पड़ा।

महाभारत महाकाव्य का नाम पहले 'जय'/'जय संहिता' था, फिर 'भारत' और फिर 'महाभारत' पड़ा। 'जय' में सिर्फ 8800 श्लोक थे, जैसे-जैसे इसमें अन्य कहानियां जुड़ती गईं, इस पोथे का भार भी बढ़ता गया।

इसलिए इसका नाम भारी यानी भारत रख दिया गया और जब इसमें और भी बढ़ोत्तरी होती गई और इसके 18 खण्ड बनाए गए तो इसको महाभारी यानी महाभारत कहा गया। **महाभारत का भारत देश से कोई सम्बंध नहीं है, न नाम से और न ही काम से।**

हमें सचमुच दुख होता है कि हम भारतीय ही नहीं जानते कि हमारे देश का नाम भारत कौन रख गया। यह बिल्कुल ऐसा ही है, जैसे हिंदू शब्द किसी धर्मग्रंथ में नहीं है, फिर भी हम लोग हिन्दू कहलाते हैं। कोई नहीं जानता कि उनका नाम हिन्दू कौन रख गया।

प्राचीन भारत के इतिहास की अंधी गलियों में जो कोई थोड़ी-बहुत प्रकाश की किरण दिखाई देती है, उसमें एक नाम चमकता है 'सुदास' और उनका कबीला भारत। कुछ इतिहासकारों का मत है कि इस कबीले के नाम पर इस देश का नाम भारत पड़ा। सुदास दुष्यंत, भरत, शकुंतला की तरह काल्पनिक नाम नहीं है बल्कि इसका उल्लेख हमें ऋग्वेद के तीसरे मंडल के 53वें सूत्र और अन्य सूत्रों में मिलता है। कथा के अनुसार रावी नदी के पास सुदास नाम के राजा रहते थे। उनके कबीले का नाम भरत था। वह भारतीय मूल के राजा थे।

एक समय ऐसा आया जब सप्त-सिंधु नदियों (पश्चिम में सिंधु से पूर्व में यमुना नदियों तक) के भू-भाग (अविभाजित पंजाब और सिंध क्षेत्र) के कबीलों के लोग किसी बात पर दो गुटों में बंट गए, उनमें भीषण लड़ाई हुई। इस युद्ध (या झगड़े) में सुदास के विरुद्ध 10 कबीलों के लोग शामिल हुए- तुर्वश, यक्षु, अलिन, अनु, भृगु, भलिन, द्रह्यु, मत्स्य, पुरसु एवम् विसणि। ऋग्वेद (रचना काल 1400 से 1000 ईसा पूर्व) के सातवें मंडल में झगड़े का कारण एक-दूसरे के राज्य पर कब्जा करना नहीं था वरन् यह था कि सुदास के विरोधी कबीलों ने रावी नदी का एक किनारा तोड़ दिया था और राजा सुदास ने उस किनारे को फिर से बनाया। ऋग्वेद के 7वें मंडल के 18वें, 33वें और 83 वें सूत्र में इस युद्ध का दाशराज-युद्ध के नाम से वर्णन है। राजा सुदास के साथ

तृस्तु, सिम्यु एवम् सिव कबीले भी शामिल थे, इसलिए दाशराज युद्ध में 10 राजा शामिल नहीं थे।

दशराज- युद्ध में जीत हासिल करने पर राजा सुदास और उनके कबीले का उत्साह बढ़ा और उन्होंने दूर-दूर के विशाल क्षेत्र में अपनी धाक जमाई इसलिए उनके दबदबे वाले क्षेत्र को भारतीयों का राज्य कहा जाने लगा। यहीं से 'भारत' देश की नींव रखी गई। आधिकारिक रूप से प्राचीन भारत का नाम कभी भी भारत नहीं पुकारा गया। हो सकता है कि भविष्य में सिंध साम्राज्य की मुहरें पढ़ी जाएं और वहां पर "भारत" लिखा पाया जाए। वैदिक काल में इस क्षेत्र का प्रसार दक्षिण और पूर्व दिशा में बढ़ गया।

भारत/भरत/भारतवर्ष शब्द का अनेक स्थानों पर उल्लेख मिलता है। पाणिनी रचित पुस्तक 'अष्टाध्यायी' के दूसरे, चौथे और आठवें अध्याय में भरत शब्द का उल्लेख मिलता है। सप्त-सिंधु क्षेत्र दो भागों, उदीच्य और प्राच्य महाजनपदों में विभाजित था। प्राच्य अर्थात् पूर्व दिशा के महाजनपद (अविभाजित पंजाब के दक्षिण-पूर्व का क्षेत्र) को ही भरत जनपद या प्राच्य जनपद कहा गया, जिसमें हस्तिनापुर, कुरूक्षेत्र और इंद्रप्रस्थ आदि नगर स्थित थे।

महाभारत महाकाव्य में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को इसीलिए भरत नाम से सम्बोधित किया है। उदीच्य अर्थात् पश्चिम दिशा के महाजनपद को गंधार जनपद (अविभाजित पंजाब के उत्तर पश्चिम का क्षेत्र और आज का अफगानिस्तान) कहा गया। महाभारत महाकाव्य में गांधारी का संबंध इसी महाजनपद से था।

भारत कोई 70 वर्ष पुराना देश नहीं है। यह हजारों वर्षों पुरानी एक सभ्यता है जिसकी पहचान भौगोलिक अवस्थिति से होती है। भारत के रहने वाले इतने पुराने हैं कि इसे सनातन यानि जो सदा से यानि अविरल समय से चला आ रहा है।

श्रीविष्णु पुराण में स्पष्ट लिखा है :-

उत्तरं यत समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणं।

वर्ष तद् भारतं नाम भारती यत्र सन्ततिः॥

(अर्थात् समुद्र के उत्तर से लेकर हिमालय के दक्षिण

में जो देश है वही भारत है और यहाँ के लोग भारतीय हैं)

जैन मत के अनुसार हमारे देश का नाम भारत था। एक कथा के अनुसार प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव की पत्नी को एक रात 4 स्वप्न दिखाई दिये, जिसका ऋषभदेव जी ने यह अर्थ निकाला कि उन्हें एक चक्रवर्ती पुत्र प्राप्त होगा। पुत्र भरत ने जन्म लिया और चक्रवर्ती राजा बने। इन्हीं के नाम पर यह भू-भाग भारत कहलाया। भरत ने अपना शासन अयोध्या से चलाया।

ऐतिहासिक प्रमाण के अनुसार ईसा पूर्व पहली शताब्दी में कलिंग (आज का उड़ीसा राज्य) में 'धारवेल' नामक जैन राजा का शासन था। भुवनेश्वर के निकट उदयगिरि पहाड़ियों में प्राकृत भाषा में ब्राह्मी लिपि में लिखा हुआ हाथीगुम्फा शिलालेख है। इस शिलालेख में हमारे देश का नाम भारतवर्ष लिखा हुआ है।

बौद्ध मतावलंबी सम्राट अशोक के शिलालेख में हमारे देश का नाम 'जम्बुद्वीप' (आज का एशिया और यूरोप महाद्वीप) लिखा हुआ मिलता है। जम्बुद्वीप का जिक्र श्री पद्म पुराण, वायु पुराण



(रचना काल कम से कम 350 ईस्वी), श्री विष्णु पुराण (रचना काल 400 ईसा पूर्व से 900 ईस्वी) और श्रीवामन पुराण (9वीं से 11वीं ईस्वी के बीच) में भी मिलता है। वायु पुराण के प्रथम अध्याय के 87वें और 88वें श्लोक में क्रमशः भारत और जम्बुद्वीप का वर्णन मिलता है।

भारतदीनि वर्षाणि नदीभिः पर्थतैस्तथा।

भूतैश्चोपनिविशिष्टानि गतिमन्द्भिर्धवैस्तथा॥87

जम्बुद्वीपादयोद्वीपाः समुद्रैः सप्तभिर्वृताः।

ततश्चाप्यमयी भूमिलोकालोकश्च कीव्यते॥88

(भारत आदि वर्ष चल, अचल, नदियों, पर्वतों तथा प्राणियों से भरे हैं। जम्बुद्वीप आदि द्वीप सात समुद्रों से घिरे हैं और उसके पश्चात् जलमयी भूमि तथा लोकालोक का कीर्तन है)

इसी प्रकार श्रीवामन पुराण के 13वें अध्याय के पहले, दूसरे और चौथे श्लोक में भारत और जम्बुद्वीप का वर्णन मिलता है-

**भवद्विरुदिता घोरा पुष्करद्वीपसंस्थितिः।**

**जम्बुद्वीपस्य तु संस्थानं कथयन्तु महर्षयः॥1**

**जम्बुद्वीपस्य संस्थानं कथ्यमानं निशामय।**

**नवभेदं सुविस्तीर्णं स्वर्गमोक्षफलप्रदम्॥2**

**पूर्वदक्षिणतश्चापि किंनरो वर्ष उच्यते।**

**भारतो दक्षिणे प्रोक्तो हरिर्दक्षिणपश्चिमे॥4**

(आदरणीय ऋषियों! आप लोगों ने पुष्कर द्वीप के भयंकर अवस्थान का वर्णन किया, अब आप लोग (कृपाकर) जम्बुद्वीप की स्थिति का वर्णन करें। ऋषियों ने कहा तुम हम लोगों से जम्बुद्वीप की स्थिति का वर्णन सुनो। यह द्वीप अत्यंत विशाल है और 9 भागों में विभक्त है। यह स्वर्ग एवम् मोक्षफल को देने वाला है। जम्बुद्वीप के पूर्व-दक्षिण में किन्नरवर्ष, दक्षिण में भारतवर्ष और दक्षिण-पश्चिम में हरिवर्ष है।)

वायु पुराण के अनुसार महाराज प्रियव्रत का अपना कोई पुत्र नहीं था तो उन्होंने अपनी पुत्री के पुत्र अग्नीन्ध्र को गोद ले लिया जिसका पुत्र नाभि था। नाभि की एक पत्नी मेरु देवी से जो पुत्र पैदा हुआ उसका नाम ऋषभ था। इसी ऋषभ के पुत्र भरत थे तथा इन्हीं भरत के नाम पर इस देश का नाम 'भारतवर्ष' पड़ा। हालांकि कुछ लोग मानते हैं कि श्रीराम के कुल में जो भरत हुए उनके नाम पर इस देश का नाम 'भारतवर्ष' पड़ा। यहां बता दें कि पुरुवंश के राजा दुष्यंत और शकुंतला के पुत्र भरत के नाम पर 'भारतवर्ष' नहीं पड़ा।

लेकिन यहां पर जिस भू-भाग का वर्णन है वह आज के भारत से काफी विशाल है। इसके दक्षिण में धनुष के आकार का भाग था, जिसका आकार आज के

दक्षिण-पूर्व एशिया से मिलता है। विद्वानों के अनुसार जम्बुद्वीप नाम इस वृहत्त भू-भाग के जामुन वृक्ष के लिए उपजाऊ होने या बहुतायत में होने के कारण कहा जाता होगा। निःसंदेह **भारत का वर्णन एक विशाल भू-भाग 'जम्बुद्वीप' के भीतर होना बताया गया है।**

जम्बुद्वीप का उल्लेख वैदिक साहित्य में ही नहीं बौद्ध और जैन साहित्य में बहुत विस्तार से बताया गया है। बौद्ध ग्रंथ महावम्स (Mahavamsa) में उल्लेख है- सम्राट अशोक के पुत्र महिंद्रा ने श्रीलंका के राजा देवानमपियातिसा को अपने परिचय में जम्बुद्वीप से सम्बद्ध होना बताया है।

जैन ग्रंथों जम्बुद्वीपप्रज्ञापति (Jambūdvīpaprajñapti), त्रिलोकसार (Trilokasāra), त्रिलोककप्रज्ञापति (Trilokaprajñapti), त्रिलोकदीपिका (Trilokadipikā), क्षात्रसमास (Ksetrasamāsa) आदि में जम्बुद्वीप का विस्तार से वर्णन है।

फारसी मूल का नाम 'हिंदुस्तान' मुगलों के द्वारा नहीं दिया गया है। तीसरी शताब्दी में ईरान (Persia) के सासानी शासक शापुर प्रथम (Sasanian ruler Shapur-I, 240-270 CE) के नक्श-ए-रूस्तम परिसर में स्थित शिलालेख काबा-ए-जरतोस्त (Ka'ba-ye Zartosht inscription in Naqsh-e Rostam compound) में 'हिंद' नाम का उल्लेख मिलता है जो कि सासानी साम्राज्य के दक्षिण - पूर्व में सिंधु नदी के किनारे स्थित एक प्रांत था। यह लेख तीन भाषाओं ईरानी, पहलवी और ग्रीक में है।

ईरानी में हिंदुस्तान, पहलवी में हिंदी और ग्रीक में इंडस-लैंड (Indusland) लिखा गया है। संस्कृत का 'स्थान' शब्द फ़ारसी में 'स्तान' हो जाता है। इस तरह हिन्द के साथ जुड़ कर हिन्दुस्तान बना। आशय जहाँ हिन्दी लोग रहते हैं, हिन्दू बसते हैं वह हिन्दुस्तान है।

आगे चलकर पूरे भू-भाग अर्थात् अखण्ड भारत के लिए हिंदुस्तान नाम का उपयोग गजगान (उत्तर

अफगानिस्तान) के किसी अज्ञात फारसी लेखक ने दसवीं शताब्दी में अपने भूगोल की पुस्तक 'हुद-हुद-अल-आलम' (Hudūd al-Ālam min al-Mashriq ilā l-Maghrib meaning 'Boundaries of the World from the East to the West') में किया गया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि इंडिया, हिंदुस्तान और भारत तीनों ही प्राचीन नाम हैं, लेकिन इंडिया और हिंदुस्तान नाम विदेशियों द्वारा रखा गया और भारत इस भू-भाग में जन्मा हुआ हमारी संस्कृति से जुड़ा हुआ स्थानीय नाम है। भारत शब्द 2 अक्षरों से मिलकर बना है, भा (प्रकाश) और रत (लगा होना) अर्थात् भारत का शाब्दिक अर्थ है ज्ञान के प्रकाश के अनुसंधान में लगा हुआ। इसलिए भारत शब्द से आध्यात्मिकता/आत्मीयता का बोध होता है। इंडिया शब्द का स्रोत भौगोलिक सीमा (सिंधु नदी का पूर्वी क्षेत्र) से है।

भारतीय संविधान के निर्माण करते समय हमारे देश के नाम को लेकर व्यापक मंथन किया गया। भारतीय संविधान के प्रारम्भिक प्रारूप (draft) में हमारे देश को परिभाषित किया गया "India shall be a Union of States".

इस पर नवम्बर 1948 में हुई बहस में कुछ सदस्यों द्वारा मांग की गयी आर्टिकल 1 (1) में शब्द INDIA के स्थान पर भारत (Bharat), भारत वर्ष (Bharat Varsha), हिंदुस्तान (Hindustan) प्रतिस्थापित किया जाये। श्री अनंथशयनम अयंगर द्वारा यह आग्रह किया गया कि प्रारूप में सुझाये गये आर्टिकल 1 (1) को यथावत स्वीकार कर लिया जाये।

17 सितम्बर, 1949 को इस विषय पर पुनः बहस हुई। संविधान के प्रारूप समिति के अध्यक्ष डॉ. भीमराव अंबेडकर जी (Chairman of the panel heading drafting the Constitution) द्वारा यह प्रस्तावित किया गया कि आर्टिकल 1 (1) को India, that is, Bharat, shall be a Union of States". रखा जाये।

अगले दिन श्री हरिविष्णु कामथ जी द्वारा इस पर एक संशोधन प्रस्ताव पेश किया गया कि आर्टिकल 1

(1) को "Bharat or, in the English language, India, shall be a Union of States." किया जाये। उन्होंने तर्क दिया कि जैसे नवजात शिशु का नामकरण किया जाता है उसी तरह नये गणतंत्र का भी नामकरण किया जाना चाहिए और इसीलिए Bharat, Hindustan, Hind and Bharatbhumi or Bharatvarsh आदि नाम सुझाये गये हैं।

सेठ गोविंद दास द्वारा डॉ. भीमराव अंबेडकर जी के प्रस्ताव पर कहा गया कि हमने स्वतंत्रता की लड़ाई "भारत माता की जय" के नारे से जीती है इसलिए यह हर्ष का विषय है कि 'भारत' नाम को स्वीकार किया जा रहा है। हालांकि, उन्होंने कहा कि कथन (phrase) "India, that is, Bharat" हमारे प्यारे देश के लिए उपयुक्त नहीं है और इसे "Bharat known as India also in foreign countries" किया जाना चाहिए।

श्री कमलापति त्रिपाठी द्वारा कहा गया कि वह ऐतिहासिक नाम "भारत" से वह मोहित हैं जिसके उच्चारण से सदियों पुराने सांस्कृतिक जीवन की अनुभूति होती है और इसमें हमारी पवित्र यादें समाहित हैं।

अंत में डॉ. भीमराव अंबेडकर जी के द्वारा पेश प्रारूप के अनुसार आर्टिकल 1 (1) को "भारत, अर्थात् इंडिया, राज्यों का संघ होगा" (India, that is Bharat, shall be a Union of states) को स्वीकार कर लिया गया। तब से आधिकारिक तौर पर हमारे देश को "भारत गणराज्य" या "रिपब्लिक ऑफ इंडिया" के नाम से जाना जाता है।

**अस्वीकरण (Disclaimer) :** लेख में दिये गये विवरण ऐतिहासिक और धर्मग्रंथों से लिए गये हैं, जिनका उद्देश्य केवल देश के विभिन्न प्रचलित नामों की प्राचीनता दर्शाना है और किसी पंथ या मजहब का महिमामंडन या अनदेखी करना नहीं है।

संजय कुमार  
निदेशक

भारतीय सर्वेक्षण विभाग, पश्चिम क्षेत्र कार्यालय, जयपुर

## यशस्विनी

सी.आर.पी.एफ. महिला बाइक अभियान



सदियों के औपनिवेशिक शासन के बाद भारत को आजादी मिलने के 75 साल बाद राष्ट्र ने “आजादी का अमृत महोत्सव” मनाया। “अमृत काल” के पहले वर्ष में, भारत अपनी “नारी शक्ति” का जश्न मना रहा है। यह गणतन्त्र दिवस पेरड पर एक मुख्य आकर्षण था और सी.आर.पी.एफ. की महिला मार्चिंग टुकड़ी ने बड़े बहादुरी से “कर्तव्य पथ” पर मार्च करते हुए सभी ओर से भारी प्रशंसा प्राप्त की। केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल ने इस वर्ष अपनी महिला कर्मियों की बहादुरी और दृढ़ संकल्प का जश्न मनाने के लिए अनेकों कार्यक्रम आयोजित किये हैं।

देश की नारी शक्ति के उत्सव के रूप में, सी.आर.पी.एफ. के द्वारा देश के विभिन्न हिस्सों से “यशस्विनी” सी.आर.पी.एफ. महिला बाइक अभियान का आयोजन किया गया, जिन्हें कि ऐतिहासिक लाल चौक श्रीनगर, त्रिवेणी कन्याकुमारी और शिलांग के पोलो ग्राउंड से 03 अक्टूबर-2023 को हरी झंडी दिखाई गई। ये तीनों टीमों प्रत्येक टीम में 50 महिला कर्मियों के साथ 25 बाइकें शामिल है, (जिसमें लगभग 150 महिला बाइकर्स शामिल है,) 25 रॉयल एनफील्ड 350 सीसी मोटरसाइकिलों पर सवार बहादुर महिलाएं ‘एकता और समावेशिता’ का संदेश लेकर उनके द्वारा देश भर में लगभग 10000 किलोमीटर की यात्रा तय की है।

सी.आर.पी.एफ की “यशस्विनी” महिला मोटरसाइकिल रैली टीम, श्रीनगर एवं शिलांग से गुरुग्राम होते हुए, गुरुग्राम से चलकर कुल 2426 किलोमीटर की दूरी तय करते हुए दिनांक 21/10/2023 “पुलिस स्मरण दिवस” के दिन जयपुर राजस्थान में पहुँची थी। इस दिन शाम के समय आनंद इंटरनेशनल कॉलेज ऑफ

इंजीनियरिंग, कानोता, जयपुर (राजस्थान) के प्रांगण में आगमन के अवसर पर “यशस्विनी” सी.आर.पी.एफ. महिला बाइक टीम का “फ्लैग इन” एवं स्वागत हमारे साथ-साथ सुश्री मोनिका मित्तल अग्रवाल, उपाध्यक्षा, आनंद इंटरनेशनल कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, कानोता, जयपुर के द्वारा बहुत ही गर्म जोशी के साथ किया गया। उनके द्वारा “यशस्विनी” सी.आर.पी.एफ. महिला बाइक टीम के सदस्यों को अपने यहाँ ही कॉलेज परिसर में एक दिन रोकने के लिए हम से अनुरोध किया गया, जिससे कि उनके हौसलें की गाथा परिसर में उपस्थित छात्र एवं छात्राएँ उनकी जुबानी सुनकर अपने भविष्य को नई ऊँचाइयाँ प्रदान कर सकें। सुश्री मोनिका मित्तल अग्रवाल, उपाध्यक्षा, द्वारा न केवल उनके ठहरने व भोजन की व्यवस्था में हमें सहयोग प्रदान किया अपितु उनके आगमन पर उनके स्वागत में इंजीनियरिंग कॉलेज के छात्र एवं छात्राओं के द्वारा रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया, उनके द्वारा जहाँ राजस्थान का घूमर नृत्य पेश किया गया, तो गुजरात का गरबा, वहीं पंजाब का भंगड़ा व गिद्धा नृत्य प्रस्तुत करने के साथ-साथ बल के बैंड कार्मिकों के द्वारा उनके आगमन पर देशभक्ति से प्रेरित गीतों को अपनी मधुर आवाज में गा कर एवं बल की 83 वाहिनी आर.ए.एफ. के कार्मिकों के द्वारा राजस्थान का चिर प्रचलित “काल बेलिया” नृत्य प्रस्तुत करके सभी को मंत्र मुग्ध कर दिया गया, एक ऐसा समा बांध दिया गया कि जैसे की सी.आर.पी.एफ. महिला बाइक के स्वागत में पूरा हिंदुस्तान ही जयपुर में अपने पग पसार कर उनके आगमन की खुशी में अपने प्यार की चादर फैला रहा हो। इस स्वागत ने बाइक रैली टीम की थकान को गायब कर

दिया और रैली टीम की सदस्या भी गरबा के रंग में छात्राओं के साथ रम गई।

महिला बाइकर्स पूरे देश में 15 राज्यों तथा 2 केन्द्र शासित प्रदेशों में महिला छात्राओं, एन.सी.सी. के कैडेटों, आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं और महिला स्वयं सहायता समूहों से मिली और उनसे बातचीत की। इस रैली का मुख्य उद्देश्य महिला सशक्तिकरण, शान्ति, सद्भाव एवं देश प्रेम का संदेश देना था। दिनांक 22/10/2023 को महामहिम श्री कलराज मिश्र, राज्यपाल, राजस्थान के द्वारा अल्बर्ट हॉल के प्रांगण में इनका भव्य स्वागत किया गया, यशस्विनी टीम की जवानों का हौसला बढ़ाते हुए इस समारोह को महामहिम द्वारा जोश और उत्साह से परिपूर्ण बनाया व उसके पश्चात यशस्विनी महिला मोटरसाइकल रैली टीम को अजमेर के लिए रवाना किया/ “फ्लैग ऑफ” किया गया।

जयपुर से अजमेर प्रस्थान के दौरान बगरू शहर के निकट “चौधरी ढाबा” पर देश की ऑयल क्षेत्र में अग्रणी कंपनी इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन, जयपुर के प्रमुख श्री रमन दीप सिंह एवं पंजाब नेशनल बैंक के कर्नल सिधांशु जी के द्वारा भी “यशस्विनी” महिला मोटरसाइकल रैली टीम, के हौसलों को देखते हुए उनका गर्मजोशी के साथ स्वागत किया एवं भोजन की व्यवस्था करने में आगे बढ़कर बल को पूरा सहयोग दिया। ऐसा शानदार स्वागत किया गया, यशस्विनी महिला मोटरसाइकल रैली टीम का, जिसके बारे में अपने प्रवास के दौरान की उपलब्धियों का जिक्र करते हुए रैली टीम के द्वारा महानिदेशक महोदय को अवगत कराया गया। जयपुर शहर में उनके आगमन से प्रस्थान तक की अवधि के दौरान सभी के द्वारा भरपूर सहयोग प्रदान किया गया, आम जनता भी उनके स्वागत में सहयोग करने में कहीं भी पीछे नहीं रही। इस बात को सार्थक करता जयपुर “पधारो म्हारे देश”। जयपुर से अजमेर व उदयपुर होते हुए वहाँ से उनके द्वारा एकता नगर (गुजरात) के लिए प्रस्थान किया गया।

ऐतिहासिक लाल चौक श्रीनगर, पानी के संगम

त्रिवेणी कन्याकुमारी और शिलांग के पोलो ग्राउंड से शुरू हुई यात्रा स्टैच्यू ऑफ यूनिटी, एकता नगर (गुजरात) पर जाकर दिनांक 31/10/2023 को समाप्त हुई।

जय हिंद...जय भारत...

विक्रम सहगल

महानिरीक्षक

के.रि. पु. बल, राजस्थान सेक्टर, जयपुर

## मांड

मांड या मांड राजस्थान में गायन की प्रसिद्ध शैली है। यह शास्त्रीय हल्लको में मान्यता प्राप्त है और राजस्थान के लोक गीतों में यह शैली बहुत महत्वपूर्ण है। इसे न तो पूर्ण राग में स्वीकार किया गया ओर न ही इसे स्वतंत्र रूप से प्रस्तुत लोक गीतों में गिना जाता है। ये ठुमरी और गजल के बहुत ही नजदीक मानी जाती है।

दूसरी तरफ यह भी मान्यता है कि मांड राजा-महाराजाओं के समय में इस शैली की उत्पत्ति हुई जब राजा-महाराजा युद्ध के मैदान से विजयी होकर अपने महलों में आते थे तो उनकी रानियों द्वारा अपनी मन की बात गीत-संगीत के माध्यम से अपनी भावनाओं को प्रस्तुत अथवा व्यक्त करवाती थीं मांड कर अर्थात लिख कर इस तरह राजस्थान में इस शैली का प्रचलन लोगों के सामने आया।

इस शैली में कई प्रसिद्ध गायकों ने अपनी गायिकी का जादू बिखेरा जैसे गवरी बाई, अल्लाह जिलाई बाई। वर्तमान में अली गनी, बनारसी लाल, बुन्दू खान जैसे गायकों ने इस शैली को जिंदा रखने के लिए प्रयास कर रहे हैं। ताकि यह शैली लुप्त न हो सके।

राजू जौहरी

प्रदर्शक, केंद्रीय संचार ब्यूरो, जयपुर

## बीकानेर का ऊँट महोत्सव



राजस्थान एक विविधता भरा प्रदेश है। यहां विभिन्न प्रकार के रीति-रिवाज और परंपराएं जीवन्त होती हैं। राजस्थान की धरती पर इसके विविध प्रान्तों में लगने वाले मेले-ठेले, महोत्सव इत्यादि इसकी शान व संस्कृति को प्रतिबिंबित करते हैं।

ऐसा ही एक महोत्सव राजस्थान के बीकानेर में बड़ी धूम-धाम व उल्लास के साथ मनाया जाता है जो “बीकानेर ऊँट मेला” अथवा “कैमल फेस्टिवल” के नाम से प्रसिद्ध है। राजस्थान पर्यटन विकास निगम (RTDC) के साथ स्थानीय प्रशासन भी इस आयोजन में भागीदार रहता है। हर साल यह आयोजन इतना भव्य होता है जिसकी कल्पना करना भी मुश्किल है। कैमल फेस्टिवल शुरुआत से ही बीकानेर में आयोजित किया जा रहा है क्योंकि बीकानेर में ऊँट अनुसंधान एवं प्रजनन केन्द्र है जो एशिया का एकमात्र ऐसा केन्द्र है जिसका कार्य ऊँट मालिकों को सहायता प्रदान करना तथा ऊँटों की ब्रीडिंग (प्रजनन) एवं ऊँटों में होने वाली बीमारियों व उनके निदान पर रिसर्च करना है।

कैमल फेस्टिवल में ऊँटों के बीच कई आकर्षक प्रतियोगिताएं करवाई जाती हैं। जिसे देखने के लिए भारत के साथ-साथ विदेशी सैलानी भी बहुत उत्साहित रहते हैं। यह महोत्सव प्रतिवर्ष जनवरी माह में 13 व 14 तारीख को मनाया जाता है। इस दो दिवसीय ऊँट महोत्सव में अनेक रंगा-रंग कार्यक्रम आकर्षण का केन्द्र होते हैं। 2023 में आयोजित ऊँट मेले ने 30 वर्ष पूर्ण कर लिए हैं।

**बीकानेर ऊँट मेले का इतिहास :-** इस उत्सव का मुख्य आकर्षण राजस्थान की आन बान व शान सजीले ऊँट हैं। मेले में ऊँटों को लेकर जो आयोजन किए जाते

हैं उनको देखने के लिए देशी पर्यटकों के साथ-साथ विदेशी पर्यटकों का उत्साह देखते ही बनता है। कहा जाता है कि बीकानेर से ऊँटों का बहुत पुराना रिश्ता है। बीकानेर शहर की खोज करने वाले, जिनके नाम पर बीकानेर शहर का नाम पड़ा राव बीका जी ने बीकानेर में ऊँटों का पालन-पोषण करना शुरू किया था, प्रतिदिन के यातायात में काम आने के साथ-साथ इनसे मिलने वाले दूध को भी उपयोग में लाया जाता था। घरेलू उपयोग के अतिरिक्त ऊँटों को सेना के लिए भी प्रशिक्षित किया जाता है। इस प्रकार के ऊँटों को गंगा रिसाल कहा जाता है। आज भी भारतीय सेना ऊँट पर सवार हो कर बॉर्डर की सुरक्षा करती है। इसी क्रम में राज्य सरकार ने भी ऊँट को राज्य पशु का दर्जा देकर इसकी गरिमा व उपयोगिता को और बढ़ा दिया है।

**ऊँट मेले में होने वाले आयोजन:-** इस मेले में विविध प्रकार के आयोजन किए जाते हैं। यह उत्सव बीकानेर के जूनागढ़ किले से शुरू होकर मुख्य उत्सव स्थल डा. कर्णी सिंह स्टेडियम पर समाप्त होता है। उत्सव के पहले दिन पर्यटकों के लिए निःशुल्क कैमल सफारी एवं कैमल राइड, सेना द्वारा बैगपाईपर बैंड वादन, ऊँट सजाओं प्रतियोगिता, ऊँट के बाल काटने की प्रतियोगिता, ऊँट नृत्य, मिस मरवण व मिस्टर बीकाणा की प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं, वहीं दूसरे दिन महिला व पुरुषों के लिए खो-खो प्रतियोगिता, पुरुष एवं महिला रस्साकशी, ग्रामीण कुश्ती व कबड्डी, साफा बांधों प्रतियोगिता, महिला मटका दौड़ एवं महिला म्यूजिकल चेयर प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। उत्सव के दौरान अग्नि नृत्य की भी प्रस्तुति रोमांचक होती है। किन्तु इस महोत्सव का मुख्य आकर्षण होता है ऊँटों की

दौड़ तथा उन पर बैठे सजे धजे रौबीले जो ऊँटों पर बैठकर उनको हाँकते हैं। इस फैस्टिवल में ऊँट का नृत्य भी बहुत पसंद किया जाता है जिसमें ऊँट राजस्थानी लोकगीतों पर नृत्य करते हुए कलाबाजियाँ दिखाते हैं। कई विदेशी सैलानी भी इस लोक रंग में रच-बस जाते हैं तथा वहाँ की पारंपरिक पोषाक पहन कर राजस्थानी लोकगीतों पर नृत्य करते हैं। सुदूर गांवों में रहने वाले लोग भी अपने-अपने ऊँटों को लेकर इस महोत्सव में सम्मिलित होने के लिए आते हैं। बी.एस.एफ के जवान भी अपने ऊँटों के दस्ते के साथ शामिल होते हैं तथा अपने ऊँटों के साथ करतब दिखाते हैं, उनके द्वारा सजे-धजे ऊँटों की परेड भी निकाली जाती है जिसे बहुत पसंद किया जाता है।

यह कैमल फैस्टिवल राजस्थानी सांस्कृतिक समृद्धि, रेगिस्तान की सुन्दरता और ऊँटों के महत्व को दुनिया के सामने रखता है इसके साथ ही यह राजस्थान की पारंपरिक कला, संगीत और पहनावे से रूबरू होने का अवसर भी प्रदान करता है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में राजस्थान की संस्कृति तथा ऊँटों के महत्व को पास से जानने के लिए 'रेगिस्तान के जहाज-ऊँट' को समर्पित यह कैमल फैस्टिवल बीकानेर आकर जरूर देखना चाहिए।

बबीता राघव

हिंदी अनुवादक

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा,

उत्तर पश्चिम रेलवे, जयपुर

## कृष्ण शकुनि पासों का खेल

दाव लगाने वाले सुन ले हर चाल में मेरी माया है  
तेरे पासे तेरी नियति होंगे मेरी नियति में सब खेल समाया है  
तू चलता पासों को या पासे तुझको चलते हैं  
जीवन कोई द्यूत क्रीड़ा नहीं, यहाँ हर पल में खेल बदलते हैं  
हे! सुबल पुत्र गांधार नरेश तू जो स्वांग रचाने आया है  
प्रतिशोध की आग में जो जल जाने आया है  
अपने पिता की अँगुलियों से जो तू पासे मायावी लाया है  
मत भूल इस माया का हर उत्तर मेरा साया है  
मनोभूमि छलने वाले अपने आप को ही छल रहे  
इस धर्मयुद्ध की रणभूमि में अपने आखिरी पल वो गिन रहे  
मिट्टी इस रणक्षेत्र की युगों-युगों तक लाल होगी  
महाभारत समाप्त होगी लेकिन गीता सभी का स्वाभिमान होगी।

सौम्या विजय

राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर

## पौधारोपण



केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल अपने परिचालनिक कर्तव्यों के निर्वहन के अतिरिक्त अपने समाज, शिक्षा, खेलों आदि क्षेत्रों में भी उल्लेखनीय कार्य करने के लिए जाना जाता है। वर्तमान में इस बल ने देश भर में पौधारोपण की जिम्मेदारी अपने कंधों पर ली है और पूरे देश में करीब 1 करोड़ वृक्ष लगाने का लक्ष्य देश के राज्यों में स्थित केन्द्रीय रिजर्व पुलिस के संस्थानों ने समय रहते हुए पूरा किया है।

माननीय श्री अमित शाह जी गृह मंत्री, भारत सरकार का प्रकृति प्रेम एवं पर्यावरण के प्रति लगाव अद्वितीय है। माननीय के द्वारा ही यह मुहिम शुरू की गई थी जिसे कि माननीय गृह मंत्री जी की व्यक्तिगत रुचि एवं नेतृत्व के कारण सफलतापूर्वक समय से पूर्ण कर लिया गया है। सभी केन्द्रीय बलों के सदस्यों के लिए गृह मंत्रालय भारत सरकार की एक पहल के अन्तर्गत पूरे देश में पौधे लगाने का अभूतपूर्व लक्ष्य निर्धारित किया गया था।

राजस्थान के विभिन्न शहरों को पौधारोपण के द्वारा हरा भरा करने की जिम्मेदारी, बल का एक परिसर राजस्थान के जयपुर शहर के “नायला” क्षेत्र जो कि अरावली पर्वतमाला के समीप स्थित है, उसके द्वारा ली गई है। यहाँ पर केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल का राजस्थान सेक्टर एवं 246 वाहिनी का मुख्यालय स्थापित है। अगस्त 2023 में कैम्प के एक हिस्से में वाटिका बनाकर 500 विभिन्न प्रजाति के फलदार पौधे लगाए गए। कैम्प परिसर में बनाई गई इस वाटिका को “अमृत कलश वाटिका” का नाम दिया गया व इसका लोकार्पण श्री विक्रम सहगल, महानिरीक्षक, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, राजस्थान सेक्टर, जयपुर (राज.) के द्वारा किया गया।

पौधारोपण के अवसर पर श्री प्रभात मिश्रा, महाप्रबंधक, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, जयपुर (राज.) के द्वारा भी बल का सहयोग किया गया। उनके सौजन्य से जयपुर शहर के विभिन्न हिस्सों में, बल के अधिकारियों एवं जवानों द्वारा पौधारोपण का विशेष अभियान चलाया गया। इसके साथ-साथ कैम्प के समीप स्थित नायला गांव की परिधि में मानसून की शुरुआत होने से पहले ही गांव के स्कूलों में, आस-पास के क्षेत्रों में पौधारोपण का कार्य पूर्ण कर लिया गया था, जिसमें ग्रामवासियों का सहयोग भी तारीफ के काबिल रहा। बंसत ऋतु आते ही हमारे द्वारा रोपे गए बीज एक पौधे का आकार ले चुके हैं और समय अनुरूप विकसित होकर वे एक वृक्ष के रूप में आ जाएंगे। जो हम, आप सब के लिए एवं पर्यावरण के रूप में भी, वो हमारे लिए लाभदायक/उपयोगी सिद्ध होंगे। हमारे पर्यावरण के रक्षक के रूप में कारगर होंगे।

इसके अलावा केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, राजस्थान सेक्टर, जयपुर (राज.) शहर के एक ओर अलवर शहर, राजस्थान सेक्टर मुख्यालय की परिधि में तो दूसरी ओर अजमेर शहर इसकी परिधि में आता है। अलवर शहर के बहादुरपुर पट्टी, काटला क्षेत्र में बल का कैम्प बनाने का कार्य चल रहा है, उस क्षेत्र में पौधारोपण करके उसे हरा-भरा बनाया गया है। वहीं दूसरी ओर इस सेक्टर के दो ग्रुप केन्द्र अजमेर शहर में स्थित है। वहाँ पर भी श्री विक्रम सहगल, महानिरीक्षक, राजस्थान सेक्टर के नेतृत्व में पौधारोपण अभियान चलाया गया। अजमेर में स्थित राष्ट्रीय मिलिट्री स्कूल में आम, जामुन, इमली, अनार सहित तरह-तरह के फलों और औषधियों के 7000 पौधे लगाये गये, जिनकी देख-रेख की जिम्मेदारी बच्चों ने ली और संकल्प लिया कि इसकी देखभाल हम अपने परिवार

के सदस्य की तरह करेंगे। अजमेर शहर के पुष्कर के सीमावर्ती ग्राम पंचायतों में पौधारोपण अभियान के तहत जवानों ने ग्राम पंचायत नांद के विद्यालय, किशनपुरा की गौशाला परिसर, लेसवा गांव के स्कूल और गोविंदगढ गांव के विद्यालयों सहित कई स्थानों पर करीब 5600 विभिन्न प्रकार के पौधारोपण कर ग्रामीणों को हरियाली का संदेश दिया। दूसरी ओर अजमेर के निकट सराधना गांव के सरकारी कार्यालय परिसर, शमशान स्थल, तालाब, नाड़िया में पौधारोपण कर 2000 पौधे लगाए गए। बल के कार्मिकों द्वारा पूरे अजमेर शहर को हरा-भरा करने की जिम्मेदारी अपने कंधों पर ली गई है। दोनों ही शहरों को भविष्य के वृक्षारोपण से सुसज्जित करने की जिम्मेदारी श्री विक्रम सहगल, महानिरीक्षक, केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल, राजस्थान सेक्टर, नायला, जयपुर (राज.) के नेतृत्व में किया गया है। उनका उद्देश्य पौधों का रोपण, उनकी देख-रेख, उनकी सुरक्षा प्रदान करना रहा है।

जय हिंद, जय भारत।

**उपेन्द्र माथुर**

सहायक कमांडेंट

के.रि.पु. बल, राजस्थान सेक्टर,

जयपुर (राज.)



## हे इसरो तुझे सलाम



अच्छा है चाँद पर चन्द्रयान गया है,  
न हिन्दू, न कोई मुसलमान गया है।  
न कोई राम, न कोई रहमान गया है,  
दरअसल, चाँद पर विज्ञान गया है॥

शुक्र है, वहां न कोई धर्म गया है,  
न ही जात-पात का कुकर्म गया है।  
न ही राजनीति का पराक्रम गया है,  
वहां वैज्ञानिकों का परिश्रम गया है।

वैज्ञानिकों तुम ही अंतिम विश्वास हो,  
बेशक प्रगति की लाजवाब आस हो।  
और तुम्ही हमारी उम्मीद-ए-खास हो,  
कुछ भी करो पर न देश निराश हो॥

हे इसरो, तुझे दिल से सलाम है अपना,  
तूने पूरा किया देश के गौरव का सपना।  
तुम इस जज्बे को यँही बरकरार रखना,  
न किसी अंधश्रद्धा का कर्जदार करना॥

**राम खिलाड़ी मीना**

सहायक प्रशासनिक अधिकारी

कार्यालय मुख्य अभियंता

के.लो.नि.वि., जयपुर।



## घूम-घूम कर भारत में हम आज दोहराई कर लेंगे



जोजिला कश्मीर में मिलता, अरावली राजस्थान में।  
नीलगिरी दक्षिण में पड़ती, नाथुला गया भूटान में।  
माऊंट एवरेस्ट नेपाल में आती K2 हिन्दुस्तान में।  
सुलेमान की पहाड़ी को बिहार में जाकर भर लेंगे।  
घूम-घूम कर भारत में हम आज दोहराई कर लेंगे॥  
विंध्या, मादेव, सतपुड़ा MP में आ जाते हैं,  
थाल घाट और भोर घाट को पश्चिम तट पर पाते है।  
पटकोई व नागा लुशाई बर्मा से अलग कराती है।  
गारो, खांसी मेघालय में पानी खूब बरसाती है।  
हिमालय का प्रसिद्ध दर्रा शिपकिला को भर लेंगे।  
घूम-घूम कर भारत में हम आज दोहराई कर लेंगे॥  
सतलुज, रावी, व्यास, झेलम, सिंधू में मिल जाती हैं।  
नर्मदा और ताप्ती नदियाँ अरब सागर में गिर जाती हैं।  
गोदावरी व कृष्णा दोनों आंध्र में होकर जाती हैं।  
गंगा, यमुना उत्तर में गन्ना खूब उगाती हैं।  
ब्रह्मपुत्र आसाम में बहती बिहार में कोसी भर लेंगे।  
घूम-घूम कर भारत में हम आज दोहराई कर लेंगे॥  
महानदी उड़ीसा में बहती फिर खाड़ी में गिर जाती है।  
कावेरी तमिल में एक जल प्रपात बनाती है।  
विंध्याचल के पश्चिम से निकले चबल नदी कहलाती हैं।  
दामोदर बंगाल में अपना बाढ़ का कोप दिखाती है।  
कच्छ के रण में गिरने वाली लूनी नदी को भर लेंगे।  
घूम-घूम कर भारत में हम आज दोहराई कर लेंगे॥  
राजस्थान के जैसलमेर में नया तेल का भंडार रहा।  
डिगबोई और नाहर काटिया असम में तेल तैयार रहा।  
अंकलेश्वर, कलोल, बड़ौदा गुजरात में तेल हम पाते हैं।

ज्यादा तेल की खातिर हम बॉम्बे हाई जाते हैं।  
कृष्णा व गोदावरी में नया तेल भी भर लेंगे।  
घूम-घूम कर भारत में हम आज दोहराई कर लेंगे॥  
वन मानुष व गैंडा असम के घने वनों में घूम रहे।  
कर्नाटक के जंगलों में मस्ती से हाथी झूम रहे।  
लर्मालता व हिम तेंदुआ हिमालय पर जाते हैं।  
कच्छ के रण में जाकर देखो जंगली गधे चिल्लाते हैं।  
राजस्थान में ऊँट घूमता बाघ गिर में भर लेंगे।  
घूम-घूम कर भारत में हम आज दोहराई कर लेंगे॥  
भिलाई व जमशेदपुर में लोहा व इस्पात रहा।  
H.V.J. की पाइप लाइन से गैस का यातायात रहा।  
कलपक्कम व तारापुर में परमाणु का सूत्रपात रहा।  
नेपा नगर में अखबारी कागज, कोलार में सोना भर लेंगे।  
घूम-घूम कर भारत में हम आज दोहराई कर लेंगे॥  
जामनगर में लोनी पाइपलाइन नई बिछाई है।  
सलपा-मथुरा पाइपलाइन से तेल की सप्लाई है।  
कलकत्ता, दिल्ली, मुम्बई जैसे शहरों में मेट्रो रेल चलाई है।  
उत्तरांचल के पहाड़ों में फूलों की घाटी पाई है।  
पृथ्वी के स्वर्ग कहें तो कश्मीर की घाटी भर लेंगे।  
घूम-घूम कर भारत में हम आज दोहराई कर लेंगे॥

दिनेश

डी.ई.ओ.

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा  
उत्तर पश्चिम रेलवे, जयपुर



इलेक्ट्रॉनिकी परीक्षण एवं विकास केंद्र, जयपुर  
में आयोजित हिन्दी पखवाड़ा-2023 के दौरान  
तत्काल प्रतियोगिता

इलेक्ट्रॉनिकी परीक्षण एवं विकास केंद्र, जयपुर  
में आयोजित हिन्दी पखवाड़ा-2023 के दौरान  
वाद-विवाद प्रतियोगिता



माननीय उप राष्ट्रपति श्री जगदीप धनकड़ को  
राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान की गतिविधियों की जानकारी देते हुए  
कुलपति प्रो. संजीव शर्मा

आयुष वैज्ञानिक पीठ के माननीय सदस्यगण को  
राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान की गतिविधियों की  
जानकारी देते हुए कुलपति प्रो. संजीव शर्मा





सिपेट जयपुर में दिनांक 14.9.2023 को  
आयोजित हिंदी दिवस का दृश्य

हिंदी पखवाड़ा-2023  
के समापन दिवस पर सिपेट जयपुर में  
विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को  
सम्मानित किया गया



जनगणना कार्य निदेशालय, जयपुर में  
हिंदी पखवाड़ा 2023 के अवसर पर प्रमाण-पत्र  
वितरित करते हुए निदेशक,  
श्री विष्णु चरण मल्लिक (भा.प्र.से.)

जनगणना कार्य निदेशालय, जयपुर में  
हिंदी पखवाड़ा के समापन समारोह के दौरान  
ई-समाचार बुलेटिन का विमोचन





मिलेट्स विकास निदेशालय, जयपुर में  
सितम्बर 2023 में आयोजित  
हिंदी कार्यशाला

दूरदर्शन केंद्र, जयपुर में आयोजित  
हिंदी कार्यशाला



केन्द्रीय भूमि जल बोर्ड, पश्चिमी क्षेत्र, जयपुर में  
आयोजित हिंदी पखवाड़ा

केन्द्रीय भूमि जल बोर्ड, पश्चिमी क्षेत्र, जयपुर में  
आयोजित हिंदी पखवाड़ा में पुरस्कार वितरण





श्री उपेन्द्र माथुर,  
सहायक कमांडेंट, राजस्थान सेक्टर,  
के.रि.पु.बल, जयपुर  
हिंदी दिवस के समापन समारोह के अवसर  
पर व्याख्यान देते हुए

श्री विक्रम सहगल, महानिरीक्षक,  
राजस्थान सेक्टर, के.रि.पु. बल,  
हिंदी दिवस समापन समारोह के अवसर पर  
विजेता कार्मिकों को पुरस्कृत करते हुए



मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जयपुर में 2023 में  
आयोजित हिंदी सप्ताह का छायाचित्र

मालवीय राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, जयपुर में 2023 में  
आयोजित हिंदी सप्ताह में पुरस्कार वितरण



## जी- 20 संगठन में भारत की भूमिका



**प्रस्तावना-** सन् 1997 में विश्व में आर्थिक मंदी का दौर शुरू हुआ था। इस मंदी का सबसे ज्यादा असर एशिया महाद्वीप में था। सन् 1999 में विकसित एवं विकासशील 20 देशों ने जी-20 नाम से एक अंतरराष्ट्रीय संगठन की स्थापना की। यह संगठन एशियाई वित्तीय संकट को खत्म करने की दिशा में नीतिगत मुद्दों पर चर्चा कर उनके समाधान करने के लिए काम करेगा। इस संगठन के माध्यम से जी-20 देशों के केन्द्रीय वित्त मंत्री एवं केंद्रीय बैंक के गवर्नर/प्रमुख अपने-अपने विचारों का आदान-प्रदान कर इस समस्या से निजात पाने के लिए उपायों पर चर्चा करते थे। जी-20 देश विश्व की दो-तिहाई आबादी, 85 प्रतिशत जीडीपी एवं 75 प्रतिशत से अधिक वैश्विक व्यापार का प्रतिनिधित्व करते हैं।

इस मंच के दो समानान्तर ट्रेक होते हैं :- प्रथम वित्त ट्रेक- इस ट्रेक में केंद्रीय वित्त मंत्री एवं केंद्रीय बैंक के प्रमुख/ गवर्नर शामिल होते हैं। इसके अलावा इसमें दूसरा ट्रेक शेरपा है। इस ट्रेक में कार्यपालिका के उच्चतम अधिकारी इसका प्रतिनिधित्व करता है। जी-20 संगठन में वर्तमान में अभी भारत अध्यक्ष है जिसकी वजह से भारत की भूमिका और बढ़ जाती है। इस सम्मेलन में केंद्रीय वाणिज्य मंत्री श्री पीयूष गोयल को एवं श्री अभिजात आईएस को शेरपा नियुक्त किया गया था। भारत में जी-20 देशों की 220 बैठकें -28 प्रदेशों एवं 8 केंद्र शासित प्रदेशों के 60 शहरों में आयोजित की गई। भारत का कार्यकाल 1 अक्टूबर, 2022 से 30 नवम्बर 2023 तक है। अक्टूबर 2022 में सर्वप्रथम जी-20 देशों की मीटिंग राजस्थान के प्रमुख शहर उदयपुर में आयोजित हुई थी। इसके अलावा जोधपुर एवं जयपुर में भी जी-20 देशों की मीटिंग हो चुकी है। सबसे महत्वपूर्ण बैठक केन्द्र शासित

प्रदेश जम्मू-कश्मीर की राजधानी श्रीनगर में हुई थी जिसकी चर्चा विश्वभर में हुई थी। चीन, तुर्की और पाकिस्तान ने इस मीटिंग का काफी विरोध किया था। इसके बावजूद यह मीटिंग निर्बाध रूप से बिना किसी व्यवधान के सम्पन्न हुई। भारत में सम्पन्न हुये जी-20 सम्मेलन की थीम 'वसुधैव कुटुंबकम-एक पृथ्वी, एक परिवार एवं एक भविष्य' थी।

जी-20 संगठन की प्रमुख बैठक भारत की अध्यक्षता में 09 और 10 सितम्बर 2023 को नई दिल्ली के 'भारत मंडपम' में शुरू हुई। इस बैठक की महत्वपूर्ण उपलब्धियां इस प्रकार हैं:-

1. **संयुक्त घोषणा-पत्र :-** भारत द्वारा 37 पेजों का संयुक्त घोषणा पत्र सर्व सम्मति से जारी किया गया। यह घोषणा पत्र हमारे जांबाज आईएस अधिकारियों ने कड़ी मेहनत कर 200 घंटे के अंदर तैयार 15 ड्राफ्ट के बाद सर्व सहमति से यह घोषणा पत्र जारी किया गया। सर्वसम्मति से घोषणा पत्र जारी कर भारत ने अपनी कूटनीति का लोहा मनवाया। रूस-यूक्रेन युद्ध की वजह से भारत को इसमें काफी मशकत करनी पड़ी। संशोधनों के बाद अंत में जी-20 देशों के राष्ट्राध्यक्षों ने अपनी सहमति दी।
2. **भारत-मध्य-पूर्व यूरोप कोरिडोर की घोषणा :-** नई दिल्ली में आयोजित जी-20 देशों के सम्मेलन में व्यापार को बढ़ाने के लिए भारत-मध्य-यूरोप मध्य आर्थिक कॉरिडोर बनाने की घोषणा की गई। इस कॉरिडोर में पहले जहाज के माध्यम से व्यापार करने पर सहमति जताई। इसके बाद रेल लाइन बिछाने पर सहमति हुई। इटली के राष्ट्रपति ने बीआरआई चीन कॉरिडोर से अलग होने की घोषणा की। भारत की

सक्रिय भूमिका की वजह से इस भव्य आयोजन से चीन के बजाय भारत ग्लोबल साउथ की आवाज बन गया। साथ ही यह भी साबित हो गया कि जी-20 अब हमारी सबसे गंभीर समस्याओं का हल निकाल सकता है।

3. जी-20 संगठन ने भारत के अनुरोध को स्वीकार करने के बाद अफ्रीका संघ (56 देश) को जी-20 का सदस्य बनाया गया। अफ्रीका संघ की 2.26 खरब डालर की अर्थव्यवस्था है तथा इस समूह में 56 देश आते हैं। इस प्रकार अब इस संगठन का नया नाम जी-21 हो जायेगा। क्योंकि इस संगठन में 19 देश एवं यूरोपियन संघ एवं अफ्रीका संघ भी सदस्य देश है।
4. **बायोफ्यूल पर सहमति :-** जी-20 संगठन में बायोफ्यूल अलायंस बनाने की घोषणा की गई, जिसमें पेट्रोल एवं इथेनाल मिश्रण पर सहमति बनी।
5. जी-20 बैठक में सुरक्षा परिषद में सुधार, विश्व बैंक एवं अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष में अधिक भागीदारी एवं संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में नये सदस्य देशों को जगह दिये जाने पर भी सहमति बनी।
6. जी-20 के वर्तमान अध्यक्ष भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा इंडोनेशिया के राष्ट्रपति (पूर्व अध्यक्ष) एवं ब्राजील के राष्ट्रपति (भावी अध्यक्ष) को पौधा भेंटकर स्वच्छ पर्यावरण का संदेश दिया गया।
7. **कारकेड :-** भारत की अध्यक्षता में नई दिल्ली में आयोजित जी-20 देशों की मीटिंग में पहली बार प्रत्येक राष्ट्राध्यक्षों को कारकेड की सुविधा दी गई। काफिले में पायलट कार, जैमर वाहन, सुरक्षा दस्ते की गाड़ियां, टेल कार, एम्बुलेंस, सुरक्षाकर्मियों के काफिले में प्रयुक्त स्पेशल गाड़ियां उपलब्ध कराई गई।
8. **द्विपक्षीय बैठकों का आयोजन :-** जी -20 की बैठक नई दिल्ली में आयोजित होने की वजह से

भारत ने समय का सदुपयोग करते हुये कई देशों के साथ द्विपक्षीय बैठकें आयोजित की एवं कई समझौतों पर हस्ताक्षर किये। अकेले देश संयुक्त अरब अमीरात के साथ आठ समझौतों पर हस्ताक्षर हुये।

### भारत के लिए जी-20 संगठन का महत्व :-

#### 1. प्रतिनिधित्व :-

इस संगठन के सदस्यों को विश्व के महानतम धनी अर्थव्यवस्था वाले प्रमुख देशों के साथ बैठकर नीतिगत मुद्दों पर चर्चा करने के लिए एक अंतरराष्ट्रीय मंच मिलता है। विश्व का यह सर्वोच्च संगठन भारत को आर्थिक मुद्दों पर अपना दृष्टिकोण एवं राय साझा करने का मौका प्रदान करता है। इस संगठन की मीटिंग में पहले केन्द्रीय वित्त मंत्री एवं केन्द्रीय बैंक के गवर्नर ही भाग लेते थे। आज इस संगठन की बैठक में स्वयं राष्ट्राध्यक्ष भाग लेकर महत्वपूर्ण निर्णय लेते हैं। इससे इसकी महत्ता और बढ़ जाती है।

#### 2. आर्थिक विकास :-

जी-20 संगठन भारत को दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाले प्रमुख देशों के साथ जुड़ने और अपने आर्थिक हितों को बढ़ावा देने के लिए एक अंतरराष्ट्रीय मंच प्रदान करता है। भारत वैश्विक व्यापार और निवेश को आकर्षित करने में इस मंच का सदुपयोग कर आर्थिक विकास को गति दे सकता है।

#### 3. वैश्विक मुद्दों पर चर्चा :-

शुरूआत में जी-20 में व्यापक आर्थिक मुद्दों पर ही विचार-विमर्श होता था लेकिन वर्तमान में वित्तीय एवं आर्थिक सहायता, वित्तीय प्रबंधन, सतत विकास, व्यापार एवं निवेश, आतंकवाद, लिंग असमानता, सामूहिक विकास, स्वास्थ्य, ऊर्जा, कृषि, गरीबी दूर करने, डिजिटलीकरण, बेरोजगारी, रोजगार सर्जन के नये अवसर पैदा करने, जलवायु परिवर्तन, भ्रष्टाचार, महिला सशक्तिकरण, वैश्विक शांति के लिए पहल, ग्रीन हाऊस

गैस उत्सर्जन को कम करने, महामारियों में आर्थिक सहायता, महामारी से नौकरियों पर होने वाले प्रभाव आदि महत्वपूर्ण वैश्विक मुद्दों पर भी चर्चा होने लगी है। इस कारण जी-20 संगठन का महत्व और बढ़ जाता है।

#### 4. वित्तीय स्थिरता एवं प्रबंधन:-

जी- 20 संगठन सदस्य देशों को वित्तीय सहायता उपलब्ध करवाने, वित्तीय प्रबंधन के बारे में सलाह मशविरा देता है। इससे इन देशों को अपने वित्तीय प्रबंधन करने में सहायता मिलती है। यह संगठन अंतरराष्ट्रीय वित्तीय स्थिरता को बढ़ाने में अहम भूमिका निभाता है। इस मंच के माध्यम से भारत वित्तीय विनियमन और स्थिरता से जुड़े विषयों पर चर्चा में भाग लेकर अपने हितों की रक्षा कर सकता है।

#### उपसंहार :-

शुरूआत में जी-20 में व्यापक आर्थिक मुद्दों पर ही विचार-विमर्श होता था लेकिन वर्तमान में जी-20 संगठन में वित्तीय एवं आर्थिक सहायता, वित्तीय प्रबंधन, व्यापार एवं निवेश, आतंकवाद, लिंग असमानता, समावेशी आर्थिक विकास, स्वास्थ्य, ऊर्जा, कृषि, गरीबी दूर करने, डिजिटलीकरण, बेरोजगारी, रोजगार सर्जन के नये अवसर पैदा करने, जलवायु परिवर्तन, भ्रष्टाचार, महिला सशक्तिकरण, वैश्विक शांति के लिए पहल, ग्रीन हाऊस गैस उत्सर्जन को कम करने, महामारियों में आर्थिक सहायता, महामारी से नौकरियों पर होने वाले प्रभाव आदि ज्वलंत महत्वपूर्ण वैश्विक मुद्दों पर भी चर्चा होने लगी है। इस कारण से जी-20 संगठन दिनोंदिन प्रभावशाली संगठन साबित हो रहा है और ऐसा महसूस होने लगा है कि यही संगठन हमारी गंभीर समस्याओं का हल निकाल सकता है। जी-20 मंच भारत की अध्यक्षता से वैश्विक नेतृत्व की भूमिका में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुआ है। पूर्व अध्यक्ष इंडोनेशिया, वर्तमान अध्यक्ष भारत एवं भावी अध्यक्ष ब्राजील के राष्ट्राध्यक्षों द्वारा एजेंडा तय किया गया। उन्हीं विषयों पर मीटिंग में चर्चा की गई। एक दिसम्बर

2023 से इस संगठन का अध्यक्ष ब्राजील हो जायेगा। भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने ब्राजील के राष्ट्रपति लूलो को बैटल प्रेसीडेंसी प्रदान किया। भारत की पहल पर वर्तमान में अफ्रीकी संघ के नये सदस्य बनने से यह संगठन और मजबूत होगा।

वर्ष 2023 की बैठक के अध्यक्ष भारत द्वारा अपने 13 मित्र देशों के राष्ट्राध्यक्षों को बतौर अतिथि देश आमंत्रित किया गया था। यह भी एक महान उपलब्धि साबित हुई है। भारत की सक्रिय भूमिका से आज विश्व के बड़े से बड़े देश इसकी बात को गौर से सुनते हैं एवं तवज्जो देते हैं। यह हमारी कूटनीतिक जीत है और देश का सम्मान है।

नई दिल्ली में आयोजित हुए जी-20 देशों की मीटिंग में चीन के राष्ट्रपति का न आना भी कौतूहल का विषय था। उन्होंने अपने प्रधानमंत्री को इस मीटिंग में प्रतिनिधि के तौर पर भेजा था। साथ ही रूस के राष्ट्रपति पुतिन ने भी अपने विदेश मंत्री को इस मीटिंग में भेजा था। रूस-यूक्रेन युद्ध को ध्यान में रखते हुए सर्वसम्मति से दिल्ली का घोषणा पत्र पहले ही दिन पारित होना भारत की कूटनीतिक जीत मानी गई। कोविड- 19 महामारी में भारत द्वारा मित्र देशों को टीके उपलब्ध करवाने की सराहना की गई। जी- 20 की पहली बैठक 2008 में वाशिंगटन में एवं दूसरी बैठक 2009 में लंदन में आयोजित की गई। नई दिल्ली में यह 18वीं बैठक थी। वर्ष 2008 में विश्व में आर्थिक मंदी का दौर शुरू हुआ था जब से इस संगठन का महत्व और बढ़ गया, तब से जी-20 की बैठक प्रतिवर्ष आयोजित होती है।

वर्ष 2023 में मेजबान भारत की अध्यक्षता में इस जी-20 समूह की बैठक का शानदार आयोजन नई दिल्ली में हुआ। भारत की विश्व कल्याणकारी भावनाओं के साथ, सबका कल्याण हो, विश्व एक परिवार है। इसी भावना को मजबूत करते हुए जी-20 बैठक सम्पन्न हुई।

ओम प्रकाश जायसवाल

स्टेनोग्राफर ग्रेड-1। दूरदर्शन केन्द्र, जयपुर

## भारतीय अर्थव्यवस्था में सिपेट का योगदान

### भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रस्तावना-

भारत देश सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के सन्दर्भ में विश्व की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। यह अपने भौगोलिक आकार के सन्दर्भ में विश्व का सातवां सबसे बड़ा देश है और जनसंख्या की दृष्टि से दूसरा सबसे बड़ा देश है। हाल के वर्षों में भारत गरीबी और बेरोजगारी से संबंधित मुद्दों के बावजूद विश्व में सबसे तेजी से उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं में से एक के रूप में उभरा है। वर्तमान में भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में सेवा क्षेत्र का महत्वपूर्ण योगदान है जिसमें से एक सिपेट संस्थान है।

### सिपेट संस्थान एक परिचय :

केन्द्रीय पेट्रोकेमिकल्स अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी संस्थान (सिपेट) (पूर्व में केन्द्रीय प्लास्टिक्स इंजीनियरिंग एवं तकनीकी संस्थान) की स्थापना 1968 में भारत सरकार द्वारा चैन्नई में संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) की सहायता से की गई थी, जिसका मुख्य उद्देश्य प्लास्टिक्स इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी के विभिन्न क्षेत्रों में जनशक्ति का विकास करना था।

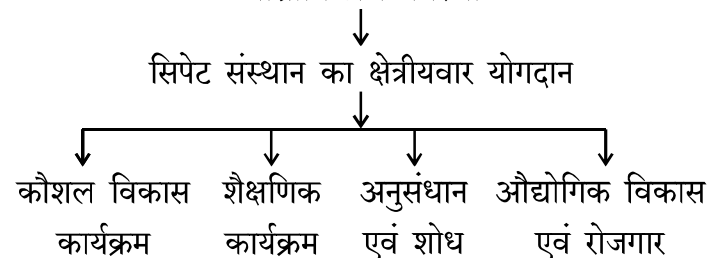
वर्तमान में सिपेट भारत सरकार के रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय के अन्तर्गत उच्च एवं तकनीकी शिक्षा के लिए एक प्रमुख स्वायत्तशासी संस्थान है। जिसके 37 केन्द्र पूरे भारतवर्ष में स्थापित हो चुके हैं एवं 5 केन्द्र प्रक्रिया में है। सिपेट के सभी केन्द्रों पर मोल्ड डिजाइन, कैड-कैम सी.ए.ई., मोल्ड बनाना, प्रसंस्करण, परीक्षण एवं गुणवत्ता नियंत्रण आदि विभागों के लिए समान रूप से संसाधनों के साथ सुसज्जित है।

### भारतीय अर्थव्यवस्था में सिपेट का योगदान :-

सिपेट ने विगत 50 से भी अधिक वर्षों के दौरान

भारत के समस्त क्षेत्रों में सिपेट केन्द्रों की स्थापना कर प्लास्टिक पॉलीमर एवं अनुसन्धान के क्षेत्रों में नए आयाम स्थापित किये हैं। सिपेट द्वारा मुख्यतः निम्नांकित गतिविधियों के माध्यम से छात्रों एवं उद्योगों को मार्गदर्शन प्रदान कर भारतीय अर्थव्यवस्था के आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में मुख्य भूमिका निभाई जा रही है-

### भारतीय अर्थव्यवस्था



सिपेट द्वारा प्लास्टिक के अभिनव प्रयोगों पर आधारित ऐसे समाधान विकसित करने के लिए उद्योगों के साथ जुड़कर भारतीय अर्थव्यवस्था में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर रहा है। आज पेट्रोकेमिकल के क्षेत्र में अत्यधिक विकास हो रहा है जिसके कारण इस क्षेत्र में रोजगार की असीम संभावनाएं प्रकट हो रही हैं, इस क्षेत्र में मानवशक्ति की बढ़ती मांग को सिपेट द्वारा युवाओं को विभिन्न डिप्लोमा, पीजी डिप्लोमा, डिग्री, अनुसंधान एवं कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से प्रशिक्षित कर रोजगार की तरफ उन्मुख कर रहा है। सिपेट संस्थान द्वारा औद्योगिक इकाइयों को तकनीकी मार्गदर्शन एवं सहायता प्रदान कर भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है।

प्लास्टिक भारतीय अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण अंग है, जिसका प्रयोग पैकेजिंग, मूलभूत संरचना, प्रसंस्कृत खाद्य तथा उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं जैसे विभिन्न क्षेत्रों में हो रहा है। इस क्षेत्र में सालाना 10 से

15 प्रतिशत की दर से वृद्धि हो रही है, जिसमें सिपेट से प्रशिक्षित युवा अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

**उपसंहार :-**

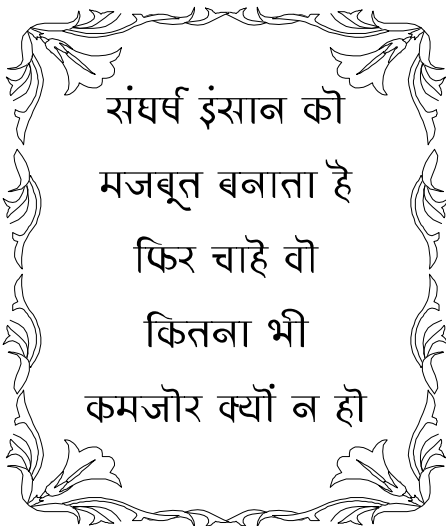
सिपेट आत्मनिर्भर भारत एवं मेक इन इंडिया जैसी योजनाओं के विकास में प्रशिक्षण, मार्गदर्शन एवं अनुसंधान के माध्यम से भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। सिपेट द्वारा युवाओं को रोजगार एवं स्वावलंबन के द्वारा नियोजन करवाया जा रहा है, जिससे निःसन्देह भारत के निर्माण में अमूल्य योगदान दिया जा रहा है।

इस प्रकार सिपेट संस्थान द्वारा मानवीय संसाधनों का विकास करके भारतीय अर्थव्यवस्था की उत्पादकता में वृद्धि कर योगदान प्रदान कर रहा है।

**ज्ञानचन्द जैन**

प्रशासनिक सहायक-।

सिपेट, सीएसटीएस, जयपुर



**कविता**



एक नौजवान के इश्क की, एक छोटी सी कहानी थी...  
कहता था...

अगर मैं लिखना भी चाहूँ इश्क तो कलम मेरी इंकलाब  
लिख जाती है...

दुल्हन मेरी दुल्हन नहीं... मेरी दुल्हन आज़ादी है...  
किया वो जो सही लगा

सही किया तो क्या खूब किया...

एक धरती के टुकड़े के खातिर...

फांसी चढ़ना मंज़ूर किया...

एक सुन्दर अल्हड नौजवान की एक छोटी सी कहानी थी...  
कहता था...

राख का हर कण मेरी गर्मी से गतिमान है

मैं एक ऐसा पागल हूँ, जो जेल में भी आज़ाद हूँ  
किया वो जो सही लगा

हिंसा का मार्ग लिया...

एक धरती के टुकड़े की खातिर...

फांसी चढ़ना मंज़ूर किया...

जो उठ कर सुबह हर रोज़... देश का गौरव कुछ बढ़ाता है...  
बेटा हो या बेटी

अपने काम से देश के काम आता है

जो डरता नहीं...

बढ़ता चला जाता है...

वो आज़ाद... वो बेफ़िक़्रा...

आज का भगत सिंह बन जाता है...

उस नौजवान की ही तरह

जो बढ़ते है डरते नहीं

वो झुटला देते है ये बात के भगत सिंह रहा नहीं...

क्योंकि भगत सिंह मरते नहीं...

**डॉ. मुक्ता**

राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान, जयपुर

## मिलेट्स: एक बहुपयोगी अनाज



मिलेट पौष्टिकता का खजाना है,  
 इस सत्य को अब आपसे क्या छुपाना है।  
 विश्व 718 लाख हेक्टर भू-भाग पर मिलेट उगाए जा रहा है,  
 863 लाख टन मिलेट उत्पादन कर खाद्यान बढ़ा रहा है।  
 भारत भी 133 लाख हेक्टर में मिलेट उगा अपना धर्म निभाने में लगा है,  
 163 लाख टन के साथ मिलेट उत्पादन में दिन रात जगा है।  
 एशिया और अफ्रीका में मिलेट मुख्य खाद्यान में आता है,  
 भारत मिलेट उत्पादन में अग्रणी भूमिका निभाता है।  
 राजस्थान, महाराष्ट्र और कर्नाटक मिलेट उत्पादन में अग्र पंक्ति में आते हैं,  
 उत्तर प्रदेश, हरियाणा और गुजरात भी अच्छी भूमिका निभाते हैं।  
 सीमांत भूमि और शुष्क क्षेत्रों में भी मिलेट अच्छी उपज देती है,  
 अच्छी भूमि और आदान में तो अच्छे से लोहा लेती है।  
 अच्छी परिस्थिति में 30 से 35 किंटल प्रति हेक्टर तक उपज दे जाती है,  
 पशुधन के लिए अच्छी किस्म के चारे के भंडार भर पाती है।  
 ज्वार, बाजरा और रागी मुख्य मिलेट का रोल निभाते हैं,  
 सांवा, कंगनी, कोदो, चीना और कुटकी छोटे मिलेट कहलाते हैं।  
 जॉब्सटियर विलुप्त तो छोटी कंगनी और क्रेप कम ज्ञात मिलेट की श्रेणी में आते हैं,  
 चौलाई और कुट्टू को छद्म मिलेट बतलाते हैं।  
 मिलेट पौष्टिकता का तो हाल ही निराला है,  
 मिलेट ने पौष्टिक तत्वों को अच्छे से संभाला है।  
 प्रोटीन सहित लोह, जिंक, कैल्सियम और फॉस्फोरस का खजाना है,  
 फाइबर, एंटीऑक्सिडेंट और नाइसिन की प्रचुरता के बारे में क्या बतलाना है।  
 रागी के साथ कैल्सियम की दोस्ती तो बहुत निराली है,  
 इसने तो फौलादी हड्डियों की नींव रख डाली है  
 मिलेट दिल, दिमाग और टाइप 2 मधुमेह रोगों पर रोक लगाती हैं,  
 कब्ज, खून कि कमी व तनाव को कोसों दूर भगाती हैं।  
 ग्लूटेन एलर्जी रोगियों के लिए वरदान बन खड़ी है,  
 मधुमेह और हड्डियों कि मजबूती में उपयोगिता बढ़ी है।

दमा, एनीमिया और यकृत विकार को कम किये जा रही है,  
 बड़ी उम्र और चयापचय रोगों को कम कर अपना रोल निभा रही है।  
 जिन दिमाग बढ़ाने में तेजी से असर दिखाता है,  
 लोह खून की कमी को पूरा करने में अपना रोल निभाता है।  
 मिलेट विश्व को कुपोषण से निजात दिलाएगी,  
 स्वस्थ शरीर संग देश में खुशहाली लाएगी।  
 देश का बचपन हँसता खेलता नजर आयेगा,  
 बुढ़ापा भी हँसते-हँसते ही कट जायेगा।  
 खा के मिलेट खिलाड़ी खेल के मैदान में दहाड़ेगा,  
 कुश्ती में तो पलक झपकते ही पछाड़ेगा।  
 खाये मिलेट एथलीट तो घोड़े की तरह दोड़ेगा,  
 पलभर में ही सारे विश्व रिकॉर्ड तोड़ेगा।  
 सरकार मिलेट विकास में अपनी अहम् भूमिका दिखा रही है,  
 तरह-तरह की योजनायें चला उन्नति की राह सिखा रही है।  
 प्रचार प्रसार के लिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मिलेट वर्ष मना रहे हैं,  
 विश्व को मिलेट की उपयोगिता समझा रहे हैं।  
 प्रदर्शन और मिनीक्रीट लगा तकनीकी को आगे बढ़ा रहे हैं,  
 आदानों पर छूट दे मिलेट उत्पादन ऊँचाइयों तक चढ़ा रहे हैं।  
 बायोफोर्टीफाइड किस्मों का विकास कर पोषक क्षमता बढ़ाने में लगे हैं,  
 सेल्फ लाइफ योजना से मिलेट की गुणवत्ता संजोने में जगे हैं।  
 बीज उत्पादन, एफ.पी.ओ. और एम.एस.पी. खुशहाली के द्वार खोल रही है,  
 रिसर्च आधारित तकनीकी उत्पादन बढ़ा मुह चढ़ बोल रही है।  
 मिलेट प्रसंस्करण, खपत और उत्पादन बढ़ा प्रगति के नए द्वार खोलेगा,  
 निर्यात में भी भारत का काम सिर चढ़कर बोलेगा।  
 मिलेट देश की दशा और दिशा बदल देगी,  
 विश्व में खानपान की परिभाषा बदल कर ही दम लेगी।  
 मिलेट अमूल्य है इस सत्य को अब तो तुम भी जानो,  
 यही स्वास्थ्य का मूल मन्त्र है इसको अब पहचानो।  
 इसको अब पहचानो।

डॉ. ओम प्रकाश खेदड़

परामर्शदाता

मिलेट्स विकास निदेशालय, जयपुर

## राजभाषा हिंदी प्रतिवेदन - प्रावैधानिक प्रक्रिया

गत माह को समाप्त हुई है, जो तीस दिनांक है,  
तो अपनी हिंदी प्रगामी तिमाही प्रतिवेदन भर लीजिए।  
जितने भर पत्र भेजे हैं अधिनियम 1976 की धारा 3(3) के,  
उनको छांट-छांट के गिन कर आँकड़े भर लीजिए।  
ध्यान देना क्या-क्या आदेश जारी किये हैं, द्विभाषी में  
जो नहीं भेजे हैं, उन पर प्रतिक्रिया झेलने की तैयारी कर लीजिए।  
पत्र जाने कितने आते रहते हैं, अंग्रेजी में, हिंदी में  
पावती, प्रेषण पंजिका से उनको देख के गिन लीजिए।  
चाहे अंग्रेजी भाषा के हो या हिंदी भाषा के हो  
उनके उत्तर हिंदी में ना दिये हो तो ऐसा क्यों हुआ कारण जान लीजिए।  
क, ख वं ग सभी क्षेत्रों को भेजे है पत्र क्या-क्या,  
हर क्षेत्र का लेन-देन क्या है उनका पता कर लीजिए।  
तिमाही में एक बैठक का नियम है, प्रावधान है  
बैठक में जो निर्णय लिए हैं, जरा उनका कार्यवृत्त दीजिए।  
कार्यशाला भी तो जरूरी है, किसी अतिथि को भी तो बुलाया था  
वो जो मानदेय देना बाकी है, वो देखकर कार्यशाला पता कीजिए।  
सुना है, संसदीय निरीक्षण हुआ है अन्य कार्यालयों का  
हमारे अधीनस्थ कार्यालयों का बचा है, तो निरीक्षण कर लीजिए।  
अब तय है कि इस कार्यालय का निरीक्षण होगा ही  
अपनी तिमाही नहीं, छमाही नहीं वार्षिक हिंदी प्रतिवेदन बना लीजिए।  
मुहरें, रजिस्टर, फाईलें, नामपट्ट, बोर्ड, जो द्विभाषी नहीं किये हैं  
उनको जल्द ही वक्त रहते जैसे-तैसे द्विभाषी कर लीजिए।  
व्यवस्था खर्च इत्यादि, जितना भी अतिरिक्त कार्य हो, सब करना है।  
लापरवाहियां जो की है, उनकी सजा समझ कर भुगत लीजिए।  
अगर कमीं जो रह गई निरीक्षण में, हिंदी संवर्ग से कहना  
काम में कमी नहीं पर अप्रत्यक्ष श्रेय उनको ही दे दीजिए।  
अब सम्पन्न हुआ निरीक्षण जैसे भी, अगली समाप्त तिमाही से  
और अब हिंदी प्रगामी प्रतिवेदन सही से बनाकर भेज दीजिए-गा।

अजय सिंह तोमर

कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

कार्यालय मुख्य अभियंता, के.लो.नि.वि., जयपुर

## सूखा सावन



नयनवा से नीर बहे सजनी।  
बीत गया सूखा सावन मास हो, नयनवा से नीर बहे सजनी।  
चैत बैशखवा में बरसी बदरिया।  
खेतवा से दाना पानी आयी ना बखरिया।  
सोच सोच जन बैठे अपने महलिया, नयनवा से नीर बहे सजनी।  
कैसे बीते बरस पहाड हो, नयनवा से नीर बहे सजनी।।  
जेठ महिनवा की गरमी निराली।  
मनवा की सारी छिन गई खुशहाली।  
गरमी को देखि मनवा आस एक जागी, नयनवा से नीरे बहे सजनी।  
बिना पानी बीतल आषाढ हो, नयनवा से नीर बहे सजनी।।  
देखि के अषाढ धक्-धक् जिया होने लागा।  
बदरी अकाश देखि आस एक जागा।  
पडत फुहार बीज खेत डारि डारि, नयनवा से नीर बहे सजनी।  
बिना पानी जरि गवा धान हो, नयनवा से नीर बहे सजनी।  
पशु पक्षी मरने लागे बिना दाना पानी।  
घर द्वार छोडि भागे गाँवा के परानी।  
पडि गवा भीषड अकाल हो, नयनवा से नीरे बहे सजनी।  
भूलि गई सावन की बहार हो, नयनवा से नीर बहे सजनी।  
बीत गया सूखा सावन मास हो, नयनवा से नीर बहे सजनी।।

तुंग नाथ त्रिपाठी

वरिष्ठ कार्यकारी (प्रशासन)

खादी और ग्रामोध्योग आयोग, रा.का., जयपुर

## महात्मा गांधी और हिंदुस्तानी भाषा



भारत धर्म, जाति, संस्कृति, भाषा, खानपान आदि के आधार पर विविधता में एकता वाला देश है। इतनी सारी विविधताओं के बावजूद राष्ट्र का एक सूत्र में बंधा होना ही इसे विशिष्ट बनाता है। हम सब जानते हैं कि भारत अन्य बातों के साथ-साथ भाषा के मामले में भी एक अत्यंत समृद्ध राष्ट्र है। न केवल इसके विभिन्न प्रांतों की अपनी भाषाएं हैं बल्कि एक ही प्रांत के अलग-अलग हिस्सों में भी उसके अनेक स्वरूप प्रचलित हैं जो एक-दूसरे से जितना मिलते-जुलते हैं उतने ही एक-दूसरे से भिन्न भी हैं। जाहिर है इतनी भाषायी विविधताओं वाले देश में एक किसी ऐसी भाषा का होना जरूरी है, जिसके माध्यम से विभिन्न भाषा-भाषी लोग एक-दूसरे के साथ संपर्क और संवाद स्थापित कर सकें। हिंदी को भारतीय संघ की राजभाषा के रूप में चाहे वर्ष 1949 में मान्यता दी गई हो मगर महात्मा गांधी स्वतंत्रता आंदोलन के दौर से ही इस बारे में न सिर्फ आग्रही थे बल्कि इसके लिए सतत् प्रयत्नशील भी थे।

भारत की संपर्क भाषा के रूप में महात्मा गांधी ने जिस भाषा की वकालत की, वह हिंदुस्तानी थी। मोटे तौर पर इसे हम हिंदी और उर्दू का मिश्रित रूप कह सकते हैं। एक ऐसी भाषा जिसमें संस्कृत के साथ-साथ अरबी-फारसी शब्दों का भी प्रयोग होता हो और जिसे देवनागरी और उर्दू लिपि में लिखा जा सके। हिंदुस्तानी को संपर्क भाषा के रूप में चुनने का सबसे बड़ा कारण यह था कि देश के एक बड़े भू-भाग के लोग इस भाषा को बोलते और समझते थे। साथ ही अन्य भाषाभाषियों के लिए भी इसे सीखना उतना मुश्किल नहीं था।

यहाँ महात्मा गांधी द्वारा हिंदुस्तानी को संपर्क भाषा के रूप में चुनने का अर्थ भारतीय राजनीति में उत्तर

भारतीय या हिंदी पट्टी के वर्चस्व को मान्यता देना कतई नहीं था। सच तो यह है कि उत्तर भारत के विभिन्न हिस्सों में भी उस दौरान आमतौर पर उस हिंदी या हिंदुस्तानी का प्रयोग कम ही किया जाता था, जिसे गांधी इस देश की संपर्क भाषा बनाना चाहते थे। इसकी जगह उस समय विभिन्न भाषा-बोलियां प्रचलित थीं जिनमें अवधी, ब्रजभाषा, भोजपुरी, मैथिली, बुंदेली, बघेली, छत्तीसगढ़ी, राजस्थानी, मारवाड़ी, हाड़ौती, हरयाणवी, मालवी, खोरठा, कुमाउंनी, मगही, मेवाती, नागपुरी और खड़ी बोली शामिल थी। यह महात्मा गांधी के आह्वान का ही परिणाम था कि स्वतंत्रता आंदोलन के उस दौर में उत्तर भारत के तमाम साहित्यकारों ने अपनी बोलियां छोड़कर राष्ट्रनिर्माण के लिए आवश्यक समझकर हिंदी या हिंदुस्तानी को अपनाया।

महात्मा गांधी स्वयं गुजराती भाषी थे। इसके अलावा अंग्रेजी भाषा में भी निष्णात थे। मगर इसके बावजूद राष्ट्रीय आवश्यकता को ध्यान में रखकर उन्होंने संपर्क भाषा और शिक्षा का माध्यम के रूप में अंग्रेजी का विरोध किया। एक सितंबर 1921 को यंग इंडिया में उनका एक लेख 'राष्ट्रीय शिक्षा' प्रकाशित हुआ, जिसमें उन्होंने लिखा कि विदेशी भाषा के माध्यम ने लड़कों के दिमाग को शिथिल कर दिया है और उनकी दिमागी शक्तियों पर अनावश्यक बोझ डाला है। उन्हें रट्टू और नकलची बना दिया है। मौलिक विचारों और कार्यों के लिए अयोग्य कर दिया है और अपनी शिक्षा का सार अपने परिवार वालों तथा जनता तक पहुँचाने में असमर्थ बना दिया है। इस विदेशी माध्यम ने हमारे बच्चों को अपने ही घर में पूरा पक्का परदेशी बना दिया है।

महात्मा गांधी किसी भी दृष्टि से अन्य भाषाभाषियों

पर हिंदी थोपने के पक्षधर नहीं थे। इससे उलट उनका मानना था कि प्रत्येक प्रांत में वहाँ की मातृभाषा ही शिक्षा और कामकाज का माध्यम होनी चाहिए। यही नहीं, वहाँ के शासकीय और न्यायिक कामकाज को भी वहाँ की प्रांतीय भाषा में ही किये जाने के वे पक्षधर थे। हिंदी की पैरवी उन्होंने अन्य भाषाभाषी प्रांतों के लिए एक अतिरिक्त भाषा के रूप में ही की, जिसके माध्यम से सारे देश के साथ संपर्क और संवाद स्थापित किया जा सके। महात्मा गांधी ने 9 अगस्त 1946 को कहा था कि महान प्रांतीय भाषाओं को उनके स्थान से च्युत करने की कोई बात ही नहीं है, क्योंकि राष्ट्रीय भाषा की इमारत प्रांतीय भाषाओं की नींव पर ही खड़ी की जानी है। दोनों का लक्ष्य एक-दूसरे की जगह लेना नहीं, बल्कि एक-दूसरे की कमी को पूरा करना है।

एक ओर जहाँ महात्मा गांधी ने दक्षिण भारत में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए नागरी प्रचारिणी सभा का गठन किया, वहीं हिंदी भाषी प्रदेश के लोगों द्वारा भी एक अन्य भारतीय भाषा को सीखने का उनका आग्रह रहा। स्वयं वे अपने अंतिम समय में भी बांग्ला भाषा सीख रहे थे।

गांधी अंग्रेजी को अनावश्यक महत्व दिए जाने के विरोधी थे। एक भाषा के रूप में वो अंग्रेजी का सम्मान

करते थे, मगर देश के कामकाज में उसके उपयोग के विरोधी भी थे। उनके ही आग्रह पर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने 1925 में कानपुर में आयोजित राष्ट्रीय अधिवेशन में हिंदी को संपर्क भाषा बनाने के लिए अपने संविधान में संशोधन किया। उससे पूर्व उसका अधिकांश कामकाज अंग्रेजी में ही हुआ करता था। गांधी ने इस तरह भाषा के माध्यम से कांग्रेस का आभिजात्य स्वरूप बदलकर उसे आम जनमानस के साथ जोड़ने का काम किया।

इसे इस देश का दुर्भाग्य ही माना जा सकता है कि भाषा के संदर्भ में महात्मा गांधी जैसी स्पष्ट दृष्टि के अभाव के कारण स्वतंत्रता के बाद न सिर्फ राजकीय कामकाज में अंग्रेजी का उपयोग जारी रहा, बल्कि स्वतंत्रता के 76 साल बाद हम देखते हैं कि हमने हिंदी और अन्य प्रांतीय भाषाओं की कीमत पर अंग्रेजी को हर क्षेत्र में अनिवार्य बना दिया है। एक अतिरिक्त भाषा या संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का विरोध करने वाले भी बेहिचक अपनी प्रांतीय भाषाओं के स्थान पर अंग्रेजी को प्रतिष्ठित होता देख रहे हैं और मूक दर्शक बने हुए हैं।

**पराग मांदले**

क्षेत्रीय प्रचार अधिकारी

केंद्रीय संचार ब्यूरो, अजमेर

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार

मेरा आग्रहपूर्वक कथन है कि अपनी सारी मानसिक शक्ति  
हिंदी भाषा के अध्ययन में लगायें।

हम यही समझें कि  
हमारे प्रथम धर्मों में से एक धर्म यह भी है।

— विनोबा भावे

## आधुनिक जीवनशैली और तनाव



आज की भागती हुए जीवनशैली में तनाव एक सामान्य सी बात है। तनाव एक बिन बुलाया मेहमान है, जो कभी भी आ जाता है, छोटे बच्चे, युवा, महिलायें बुजुर्ग बड़े शहरों में सभी तनाव में जी रहे हैं। देश की एक बहुत बड़ी आबादी तनाव से ग्रसित है, तनाव हमारे शरीर से लेकर मन दोनों पर प्रभाव डालता है। इसके कारण व्यक्ति में चिड़चिड़ापन, निराशा, हृदय रोग, उच्च रक्त चाप आदि कई बीमारियां शहरों में बड़ी तेज़ी से अपने पैर पसार रही है।

मुंबई और दिल्ली जैसे बड़े महानगरो में लगभग 27% से 31% लोग तनाव से ग्रसित पाए गए हैं। वहां की तेज रफ़्तार जिंदगी में तनाव का होना एक आम बात है। वहां पुरुषों में मानसिक तनाव की स्थिति ग्रामीण या छोटे शहरों के मुकाबले बहुत ज्यादा पायी गई है। महानगरों में व्यक्ति जिम्मेदारियों और परिवार की जरूरतों के नीचे दबे हुए होते हैं, जिससे की अक्सर खुद पर ध्यान नहीं दे पाते हैं। इसी वजह से वह अपने जीवन में होने वाली छोटी-मोटी दिक्कतों या परेशानियों को किसी के साथ साझा नहीं करते, जो बाद में मानसिक तनाव का रूप ले लेती है। ये तनाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक व अन्य कारण से हो सकता है। नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ़ मेंटल हेल्थ एंड न्यूरो साइंस के अनुसार देश के बड़े महानगरो में लगभग 2.7 % हिस्सा तनाव से ग्रसित है व 5.2% आबादी कभी-कभी तनाव से गुजरी है।

महिलाओ में तनाव पुरुषों के मुकाबले अधिक होता है, महिलाएं ज्यादा भावुक और संवेदनशील होती हैं, इसलिए वे तनाव भी जल्दी लेती हैं। अपनी जिम्मेदारियों, रिश्तों, परिवार की वे अधिक परवाह करती हैं, उनके मन में बहुत कुछ चल रहा होता है। जब तनाव सहनशक्ति के बाहर हो

जाता है, तो इसका परिवर्तित रूप शरीर और व्यवहार में दिखाई देने लगता है। शहरों की बदलते सामाजिक परिवेश और महिलाओं की ऑफिस तथा घर दोनों जगह पर सामंजस्य बैठने की कोशिश महिलाओं में तनाव का एक मुख्य कारण है।

महिलाओं के साथ-साथ तनाव का सामना बच्चे भी कर रहे हैं। बड़े शहरो के बच्चों में छोटे शहर/गाँव के बच्चों के मुकाबले अधिक तनाव देखा गया है, जो एक गंभीर रूप लेता जा रहा है। आजकल की पढ़ाई लिखाई का बोझ बच्चों के मन पर तनाव पैदा कर रहा है। उनका होमवर्क ना होना पढ़ाई में कम नंबर आना तथा क्लास में पीछे रह जाना इन सभी कारणों से मां-बाप तथा स्कूल में टीचर बच्चों को डांटते हैं। इससे बच्चों पर भावनात्मक दबाव पड़ता है। माता-पिता तथा अध्यापक हमेशा ही बच्चों पर अधिक नंबर लाने तथा कक्षा में प्रथम आने को कहते हैं। जिससे उनका कॉन्फिडेंस लेवल बहुत कम हो जाता है। भविष्य की चिंता या पढ़ाई का तनाव बच्चों में इतना रहता है कि उनके पास खेलना तो दूर खाने-पीने का भी समय नहीं होता है। सोशल मीडिया, अभिभावकों की बढ़ती महत्वाकांक्षाएं एवं ऐसे कई कारण है जो तनाव का कारण है। सोशल मीडिया पर लाइक न मिलने या फिर किसी कमेंट के कारण आजकल बच्चों में मानसिक चिंताएं देखी गई है। जो आगे चल कर मानसिक बीमारी का रूप ले रही हैं।

अगर हम हमारी जीवन शैली में थोड़ा बदलाव कर लें तो योग, प्राणायाम, ध्यान लगाकर तथा सोशल मीडिया पर अधिक समय न बिता कर हम इससे बच सकते हैं।

योगेश सांगुले

जे.ई. ड्राइंग (नि.)

प्रधान कार्यालय, उपरे, जयपुर

## ईमानदारी - एक जीवनशैली



हमारे अपने जीवन में ईमानदारी क्या है? ईमानदारी व्यक्ति के जन्म से मृत्यु तक के जीवन की स्वाभाविकता है अर्थात् जिस स्वरूप में परमपिता परमात्मा ने उसे जन्म दिया है, उसी स्वरूप में जीवन जीना ईमानदारी है।

ईमानदारी वो है जो इंसान को सीधा सपाट जीवन जीने की कला सिखाती है। वस्तुतः ईमानदारी किन्ही बाहरी तरीकों से सीखी नहीं जा सकती और ना ही सिखाई जाती है। यह तो व्यक्ति का जन्मजात गुण है जो जैसे-जैसे व्यक्ति की उम्र बढ़ती है और उस पर दुनियादारी के आचार, व्यवहार एवं वातावरण का असर पड़ता है, वो भूलता जाता है या उस पर मानव स्वभाव के दुर्गुणों जैसे झूठ, फरेब, स्वार्थ, लालच, अभिमान जो उसकी उम्र बढ़ने के साथ उसने इस दुनिया से सीखे हैं, उसके कारण वो अपने स्वाभाविक जन्मजात गुण को भूलता जाता है और यही ईमानदारी घटती चली जाती है। कवि ने कहा भी है-

“बच्चे मन के सच्चे सारी जग की आंख के तारे”

ज्यों-ज्यों इसकी उम्र बढ़े, त्यों-त्यों झूठ का मैल चढ़े  
क्रोध बढ़े, नफरत घरे, लालच की आदत घरे  
बचपन इन पापों से हटकर, अपनी उम्र गुजारे

बच्चे मन के सच्चे .....

आप स्वयं पायेंगे कि बच्चों को ईमानदारी सिखाने की आवश्यकता नहीं है अपितु बेईमानी सीखने से बचाने की आवश्यकता है। बेंजामिन फ्रेंकलिन का कथन “Honesty is the best policy” एकदम सही है। समय चाहे जो हो, पुराना हो या आधुनिक, ईमानदारी का महत्व और जरूरत तब भी उतनी ही थी जितनी आज है।

आज भले ही माना और कहा जाता है कि ईमानदार होना आसान बात नहीं है, ईमानदार व्यक्ति को

कोई सुकून से रहने नहीं देता लेकिन ये सब जानते हैं कि जितना सुकून ईमानदार होने में मिलता है उतना किसी और स्थिति में नहीं मिल सकता। चूंकि ईमानदारी यानी सच्चाई है, ईमानदार के साथ, अनुशासन चलता है, ईमानदारी में पारदर्शिता है, करुणा है, निर्भीकता है, प्रतिष्ठा है और कर्तव्य निभाने की भावना है।

थॉमस जैफरसन ने कहा है कि- In the book of intelligence, Honesty is the first chapter

ईमानदारी नैतिक चरित्र का तत्व है, जो सच्चाई, दया, अनुशासन आदि अच्छी आदतों को विकसित करती हैं। इस प्रकार हम यह मान सकते हैं कि कर्तव्य, मर्यादा व सत्य का पूर्ण निष्ठा से एवं संपूर्ण सच्चाई से सम्पन्न किया जाना ही ईमानदारी है।

ईमानदारी व्यक्ति का विशेष गुण व आदत है जो व्यक्ति को आदर्श बनाती है एवं व्यक्ति को सही मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है। इसके साथ ही व्यक्ति को उसके आदेशों और नैतिक मूल्यों को बनाए रखने में मदद करती है। ईमानदारी का महत्व इससे समझा जा सकता है कि बेईमान व्यक्ति भी अपने काम के लिए ईमानदार व्यक्ति पर ही भरोसा करता है। मान लीजिए मैंने बेईमानी से करोड़ों की संपत्ति का अर्जन कर लिया है तो मैं उसे संभालने के लिए किसी ईमानदार व्यक्ति पर ही विश्वास करूंगा न किसी बेईमान व्यक्ति पर।

ईमानदारी एक सकारात्मक मानसिकता है, जो व्यक्ति को कर्तव्यपूर्ण निष्ठा व सच्चाई की राह पर चलने का मार्ग प्रशस्त करती है। इंसान स्वयं बेईमान होकर भी अपने प्रति किसी की बेईमानी बर्दास्त नहीं कर सकता अर्थात् विजय ईमानदारी की ही होती है। इसलिए ईमानदार इंसान को सभी पसंद करते हैं।

ईमानदारी सीखने में उम्र बाधा नहीं है, यदि हम चाहें तो हर पल, किसी भी पल ईमानदारी सीख सकते हैं और ईमानदार हो सकते हैं- स्वयं के प्रति, अपनों के प्रति, समाज के प्रति, देश के प्रति और इंसानियत के प्रति। ये बेहद आसान है और हमें सिर्फ अनुसरण ही करना है उनका, जिन लोगों को उनकी ईमानदारी के गुण के कारण ही हम उन्हें आदर्श मानते आए हैं।

आइए हम सभी अभी से इस राह का (ईमानदारी की राह का) अनुसरण करें और अपनी जिंदगी को बेहतर से बेहतर बनाएं।

प्रवीण शर्मा

वरि.सेक्शन इंजीनियर, डीजल/यांत्रिक  
प्रधान कार्यालय, उपरे, जयपुर

## कविता लिखने की वजह



तुम ही हो वह शख्स  
लिखते रहते हो कविता कभी रोमांटिक  
तो कभी,  
लिखते सामाजिक सरोकार  
पर्व त्यौहार  
परोपकार,  
बाढ़ और खेत खलिहान  
सावन और चाँदनी रात,  
दीन दुखियों का हाल  
लुहा-लंगड़ा और बेरोजगारी पर उठाते सवाल।  
भेजते कविता, गजल और प्रातः वंदन संदेश  
गाने पर स्वरचित कविता का समावेश  
करती हूँ सुबह की शुरूआत पढ़ कर तुम्हारा संदेश।  
कभी-कभी आता है गुस्सा जब  
पढ़ न पाती तुम्हारी कविता का भाव  
गाने के बीच हो जाती है पंक्तियाँ लुप्त  
कभी मायूस चेहरे पर आ जाती मुस्कराहट।  
पाती हूँ तुम्हारी कविता में रोमांस भरी संकेत  
ये चाँद, तुम्हारी जुल्फें, ता उम्र प्यार, रहती वो विदेश,  
छोड़ो न और बिखरे बाल

तुम ही हो वह शख्स  
जो दर्द में भी देता है सुकून  
हसीन रात का कराता अहसास।  
एक दिन भी न आता अगर तेरा गुड मॉर्निंग संदेश  
दिन भर रहती उदास  
जानने को बेकरार तुम्हारा हाल  
कुछ न कुछ तो है जरूर कोई बात  
होगा परेशान  
सोचती रहती दिन रात।  
तुम ही हो वह शख्स  
करती रहती जिसका जिक्र सखियों के संग  
खोजती रहती तुम्हारी हर कविता का गूढ़ रहस्य।  
तुम्हारी कल्पना में महसूस करती अपनी सुंदर काया का वर्णन  
कृष्ण राधा प्रेम और  
ढूँढ़ती कई बार,  
तुम्हारा रोज-रोज  
कविता लिखने की वजह।

श्रीकृष्ण चन्द्र श्रीवास्तव  
जी.एस.आई., जयपुर

## हिन्दी के प्रयोग के लिए वर्ष 2024-25 का वार्षिक कार्यक्रम

| क्र.सं. | कार्य विवरण                                                                                                                                                                                                                                                                      | “क” क्षेत्र                                                                                                                                                                                     | “ख” क्षेत्र                                                                                                                                                                                  | “ग” क्षेत्र                                                                                                                                                                                  |
|---------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| 1.      | हिंदी में मूल पत्राचार<br>(ई-मूल सहित)                                                                                                                                                                                                                                           | 1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100%<br>2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100%<br>3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65%<br>4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 100% | 1. ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90%<br>2. ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90%<br>3. ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55%<br>4. ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 90% | 1. ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55%<br>2. ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55%<br>3. ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55%<br>4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 55% |
| 2.      | हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर<br>हिंदी में दिया जाना                                                                                                                                                                                                                         | 100%                                                                                                                                                                                            | 100%                                                                                                                                                                                         | 100%                                                                                                                                                                                         |
| 3.      | हिंदी में टिप्पण                                                                                                                                                                                                                                                                 | 75%                                                                                                                                                                                             | 50%                                                                                                                                                                                          | 30%                                                                                                                                                                                          |
| 4.      | हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम                                                                                                                                                                                                                                              | 70%                                                                                                                                                                                             | 60%                                                                                                                                                                                          | 30%                                                                                                                                                                                          |
| 5.      | हिंदी टंकण करने वाले<br>कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती                                                                                                                                                                                                                           | 80%                                                                                                                                                                                             | 70%                                                                                                                                                                                          | 40%                                                                                                                                                                                          |
| 6.      | हिंदी में डिक्टेसन/की<br>बोर्ड पर सीधे टंकण<br>(स्वयं तथा सहायक द्वारा)                                                                                                                                                                                                          | 65%                                                                                                                                                                                             | 55%                                                                                                                                                                                          | 30%                                                                                                                                                                                          |
| 7.      | हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण,<br>आशुलिपि)                                                                                                                                                                                                                                         | 100%                                                                                                                                                                                            | 100%                                                                                                                                                                                         | 100%                                                                                                                                                                                         |
| 8.      | द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री<br>तैयार करना                                                                                                                                                                                                                                         | 100%                                                                                                                                                                                            | 100%                                                                                                                                                                                         | 100%                                                                                                                                                                                         |
| 9.      | जर्नल और मानक संदर्भ<br>पुस्तकों को छोड़कर<br>पुस्तकालय के कुल अनुदान में से<br>डिजिटल सामग्री अर्थात हिंदी<br>ई-पुस्तक सीडी/डीवीडी, पैनड्राइव<br>तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं<br>से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई<br>राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद<br>पर किया गया व्यय। | 50%                                                                                                                                                                                             | 50%                                                                                                                                                                                          | 50%                                                                                                                                                                                          |
| 10.     | हिंदी और अंग्रेजी दोनों<br>भाषाओं में काम करने की<br>सुविधायुक्त इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों<br>जिनमें कंप्यूटर भी शामिल है,की खरीद                                                                                                                                                     | 100%                                                                                                                                                                                            | 100%                                                                                                                                                                                         | 100%                                                                                                                                                                                         |

|     |                                                                                                                                                                                         |              |                                                                                                                                                                                          |              |
|-----|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------|
| 11. | वेबसाइट द्विभाषी हो                                                                                                                                                                     | 100%         | 100%                                                                                                                                                                                     | 100%         |
| 12. | नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि द्विभाषी रूप में प्रदर्शित किए जाएं।                                                                                                             | 100%         | 100%                                                                                                                                                                                     | 100%         |
| 13. | (I) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत) | 25%(न्यूनतम) | 25%(न्यूनतम)                                                                                                                                                                             | 25%(न्यूनतम) |
|     | (ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण                                                                                                                                            | 25%(न्यूनतम) | 25%(न्यूनतम)                                                                                                                                                                             | 25%(न्यूनतम) |
|     | (iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण                  |              | वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण                                                                                                                                                            |              |
| 14. | राजभाषा संबंधी बैठकें                                                                                                                                                                   |              |                                                                                                                                                                                          |              |
|     | (क) हिंदी सलाहकार समिति                                                                                                                                                                 |              | वर्ष में 2 बैठकें                                                                                                                                                                        |              |
|     | (क) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति                                                                                                                                                       |              | वर्ष में 2 बैठकें<br>(प्रति छमाही एक बैठक)                                                                                                                                               |              |
|     | (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति                                                                                                                                                           |              | वर्ष में 4 बैठकें<br>(प्रति तिमाही एक बैठक)                                                                                                                                              |              |
| 15. | कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद                                                                                                                                | 100%         | 100%                                                                                                                                                                                     | 100%         |
| 16. | मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों।                                                                                           | 40%          | 30%                                                                                                                                                                                      | 20%          |
|     |                                                                                                                                                                                         |              | (न्यूनतम अनुभाग)                                                                                                                                                                         |              |
|     |                                                                                                                                                                                         |              | सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, “क” क्षेत्र में कुल कार्य का 40% “ख” क्षेत्र में 25% और “ग” क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए। |              |



भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण, राज्य इकाई राजस्थान, जयपुर के संस्था प्रधान एवं राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री अनिंद भट्टाचार्य, उप महानिदेशक को भूविज्ञान के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए पुरस्कृत करते हुए माननीय राष्ट्रपति महोदया श्रीमती द्रोपदी मुर्मू

भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण, राज्य इकाई राजस्थान, जयपुर में 'मरुवाणी' के द्वितीयांक का विमोचन करते श्री जनार्दन प्रसाद, महानिदेशक, श्री जय लाल, अपर महानिदेशक एवं विभागाध्यक्ष एवं श्री अनिंद भट्टाचार्य, उपमहानिदेशक →



वर्ष 2023 में हिंदी पखवाड़ा के आयोजन के दौरान हिंदी लेख-टिप्पणी प्रतियोगिता में भाग लेते हुए पत्र सूचना कार्यालय, जयपुर के कर्मचारी

पत्र सूचना कार्यालय, जयपुर के हिंदी आशुलिपिक श्री हरजीत सिंह सूचना पट्ट पर आज का सुविचार एवं आज का शब्द लिखते हुए



↑ नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति(का.-2) द्वारा प्रकाशित ई-बुलेटिन के विमोचन का दृश्य ।



↑ क्षेत्रीय रेल स्तर पर आयोजित प्रतियोगिताओं में विजेताओं को पुरस्कृत करते हुए तत्कालीन महाप्रबंधक, उपरे, श्री विजय शर्मा



↑ मंडल राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जयपुर की बैठक के अवसर पर त्रैमासिक समाचार बुलेटिन के विमोचन का दृश्य



↑ राजभाषा पखवाड़ा पुरस्कार वितरण समारोह 2023 के दौरान विजेताओं को पुरस्कृत करते हुए म.रे.प्र., जयपुर श्री विकास पुरवार